RNI No. 7127/60

डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City / 411 2023-25

संघशक्ति

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 60 अंक : 08 प्रकाशन तिथि : 25 जुलाई कुल पृष्ठ : 36 प्रेषण तिथि : 4 अगस्त 2023

शुल्क एक प्रति : 15/- वार्षिक : 150/- रुपये पंचवर्षीय 700/- रुपये दस वर्षीय 1300/- रुपये

वीर दुर्गादास

प्रयास एकता के तेरे देश नही भुलायेगा,
तेरे बिना बिछुड़े हुओं को कौन एक बनाएगा।

बालोतरा जिले के रेवाड़ा जैतमाल निवासी **नरेन्द्रसिंह रेवाड़ा** को शारीरिक शिक्षक बनने पर, **कंचन कंवर रेवाड़ा** कला वर्ग में 94% आने पर, **महिपाल सिंह** विज्ञान वर्ग में 90% आने पर बहुत बहुत हार्दिक शुभकामनाएं।

नरेन्द्रसिंह / पन्नेसिंह जी
शारीरिक शिक्षक

कंचन कंवर/ लाधुसिंह रेवाड़ा
कला वर्ग 94%

महिपालसिंह /सुमेर सिंह रेवाड़ा
विज्ञान वर्ग 90%

-: शुभेच्छु :-

किशोर सिंह, हरिसिंह, लुण सिंह (सरपंच), माधुसिंह, पन्नेसिंह, इन्द्रसिंह, तेजसिंह, मोहनसिंह (N) हरीसिंह (K) जालमसिंह (K), सवाईसिंह (D), प्रेमसिंह, बाबुसिंह, अनोपसिंह (K), अचलसिंह, महेन्द्रसिंह, लालसिंह, पन्नेसिंह (T), भीमसिंह, भोपालसिंह एवं समस्त राव जैतमाल सलखावत फाउण्डेशन सदस्य, रेवाड़ा जैतमाल

संघशक्ति

4 अगस्त, 2023

वर्ष : 60 अंक : 08

-: सम्पादक :-

लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास

शुल्क - एक प्रति : 15/- रुपये, वार्षिक : 150/- रुपये, पंचवर्षीय : 700/- रुपये, दस वर्षीय : 1300/- रुपये

विषय - सूची

☞ समाचार संक्षेप	✍	04
☞ चलता रहे मेरा संघ	✍ श्री भगवानसिंह रोलसाहबसर	06
☞ पूज्य श्री तनसिंहजी (के सम्बन्ध में)	✍ श्री चैनसिंह बैठवास	09
☞ आदर्श व्यक्तित्व दुर्गादास	✍ श्री जितेन्द्रसिंह	12
☞ जन्म कर्म च मे नित्यम्	✍ श्री जयदयाल जी गोयन्दका	13
☞ परमवीर पीरूसिंह	✍ बिग्रेडियर श्री मोहनलाल (से.नि.)	18
☞ महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा	✍ श्री भँवरसिंह मांडासी	19
☞ महाशक्ति प्राकट्य-श्री माल्हण बाई	✍ श्री नरसिंह माल्हणसर	21
☞ आदर्श और अनूठे गाँव	✍ कर्नल श्री हिम्मत सिंह	25
☞ रोना छोड़िये, पसीना पौंछ लीजिए	✍ स्व. श्री उम्मेदसिंह खिंदासर	29
☞ कामयाब व्यक्ति	✍ सुश्री रश्मि रामदेरिया	30
☞ भय का कारण ईश्वर-विश्वास की कमी	✍ संकलित	32
☞ अपनी बात	✍	33

समाचार संक्षेप

विभिन्न कार्यक्रम :

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पू. तनसिंहजी का यह जन्म शताब्दी वर्ष चल रहा है। इस वर्ष अनेक कार्यक्रम स्थान-स्थान पर आयोजित किए जा रहे हैं। सहयोगी-वर्ग और स्वयंसेवक अपने-अपने क्षेत्र में समय-समय पर जगह-जगह जाकर संघ सम्बन्धी तथा पू. तनसिंहजी के जन्म शताब्दी वर्ष की जानकारी देते हैं। जन्म शताब्दी मनाने हेतु 28 जनवरी को दिल्ली में होने वाले कार्यक्रम हेतु निमंत्रण भी देते हैं। पू. तनसिंहजी का जन्म संवत् 1980 के माघ माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तद्नुसार 25 जनवरी सन् 1924 को हुआ था। दिल्ली में गणतंत्र दिवस के कारण लगने वाले प्रतिबन्धों के कारण 25 जनवरी को न मनाकर 28 जनवरी को जन्म शताब्दी कार्यक्रम मनाया जाना है। इसी सम्बन्ध में स्नेह मिलन, जयन्ती व विशेष आयोजित कार्यक्रमों के माध्यम से यह जानकारी विभिन्न क्षेत्रों में पहुँचाई जा रही है। जून माह में निम्न स्थानों पर कार्यक्रम हो चुके हैं :-

- 1 जून को मेवाड़-मालवा एवं मेवाड़-बागड़ संभागों का वर्चुवल रूप से संयुक्त कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।
- 3 व 4 जून को नागोर संभाग का दो दिवसीय कार्यक्रम कुचामन स्थित आयुवान निकेतन में सम्पन्न हुआ। 3 जून को ही जैसलमेर संभाग की बैठक तनाश्रम में रखी गई।
- 4 जून को बाड़मेर की संभागीय बैठक आलोक आश्रम में सम्पन्न हुई। इसी दिन पोकरण व रामदेवरा प्रान्त का संयुक्त स्नेह मिलन श्री दयाल राजपूत छात्रावास में आयोजित हुआ। चित्तौड़गढ़ प्रान्त की प्रांतीय बैठक भी 4 जून को ऋतुराज वाटिका में सम्पन्न हुई। चित्तौड़गढ़ जिले के ही धीनवा (निम्बाहेड़ा) स्थित महादेव मंदिर में साप्ताहिक शाखा का आयोजन रहा। इसी दिन बांसवाड़ा जिले के चिरावाला गड़ा गाँव में विशेष शाखा का आयोजन किया गया। 4 जून को ही मध्य गुजरात संभाग के चरोतर प्रान्त के गाँव बड़ोद में विशेष कार्यक्रम किया गया। बीकानेर स्थित नारायण निकेतन में संभाग की कार्ययोजना बैठक भी 4 जून को रखी गई। शेखावाटी संभाग की संभागीय बैठक दुर्गा महिला संस्थान सीकर में 4 जून को आयोजित हुई।
- 6 जून को गुड़ा मालानी प्रान्त में आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में शताब्दी वर्ष की जानकारी दी गई।
- 10 जून को नोखा-कोलायत प्रान्त की कार्ययोजना बैठक श्री करणी राजपूत छात्रावास नोखा में आयोजित हुई।
- 11 जून को नाडोल स्थित आशापुरा माता मंदिर प्रांगण में पाली प्रान्त की प्रान्तीय बैठक सम्पन्न हुई। इसी दिन मध्य गुजरात संभाग की बैठक काणेटी प्राथमिक शाला में आयोजित हुई। चारभुजा मंदिर चरपोटिया (भद्रेसर) में तथा जालोदा जागीर रावला परिसर में रविवारीय विशेष शाखा का आयोजन किया गया। दिव्य ज्ञान शिक्षण संस्थान नागोला में अजमेर प्रान्त की कार्ययोजना बैठक भी इसी दिन सम्पन्न हुई। मुंबई प्रान्त की वार्षिक कार्ययोजना बैठक भी 11 जून को ही भायंदर में सम्पन्न हई।
- 18 जून को रतनगढ़ मण्डल के नूंवा गाँव में जन्म शताब्दी के सम्बन्ध में कार्यक्रम हुआ। इसी दिन

सापुणदा गाँव में अजमेर प्रान्त की साप्ताहिक शाखा रखी गई।

- 13 जून को इन्द्राणा में बालोतरा संभाग की कार्ययोजना बैठक रखी गई।
- रतनगढ़ मण्डल के पायली गाँव में स्नेह मिलन कार्यक्रम 25 जून को आयोजित हुआ। अजमेर प्रान्त साप्ताहिक शाखा 25 जून को सोल खुर्द स्थित चारभुजानाथ मंदिर में रखी गई। वागड़ प्रान्त की विशेष साप्ताहिक शाखा गढी तहसील के हिम्मतसिंह का गड़ा रावला परिसर में आयोजित रही। चित्तौड़गढ़ में श्री राम जानकी मंदिर कदमाली निम्बाहेड़ा में, पुराना हड़मतिया, भोपालसागर में विशेष शाखाएँ रखी गई।
- 25 जून को उत्तर गुजरात संभाग की संभागीय कार्ययोजना बैठक पाटन में सम्पन्न हुई। जोधपुर संभाग की संभागीय बैठक भी 25 जून को सम्पन्न हुई। गोहिलवाड़-सौराष्ट्र संभाग में हालार प्रान्त की वार्षिक कार्ययोजना बैठक राजकोट में इसी दिन हुई।
- बीकानेर में जन्म शताब्दी वर्ष के संदर्भ में क्षत्रिय शिक्षक सम्मेलन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसमें 30 जुलाई को पू. नारायणसिंह जी रेड़ा की जयन्ती मनाए जाने की जानकारी भी दी गई।
- नागौर जिले के डीडवाना क्षेत्र के गाँव गांवड़ी में रावदूदाजी की जयन्ती मनाई गई। पू. तनसिंहजी के जन्म शताब्दी वर्ष में महापुरुषों की जयन्ती मनाने का कार्य भी शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों में रखा गया है।
- बड़ी सादड़ी में झाला मन्ना का 447वाँ बलिदान दिवस मनाया गया। शताब्दी वर्ष में होने वाले कार्यक्रमों के अन्तर्गत चित्तौड़ जिले की बड़ी सादड़ी में झाला मन्ना के बलिदान दिवस पर हल्दीघाटी के सभी वीर शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई।
- 24 व 25 जून को क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन द्वारा कोटा, बूँदी व झालावाड़ में सम्पर्क बैठकों का आयोजन हुआ। क्षात्र पुरुषार्थ फाउण्डेशन के उद्देश्य को समझाया गया तथा शताब्दी वर्ष सम्बन्धी भी चर्चा हुई।
- 25 जून से 1 जुलाई तक संघशक्ति प्रांगण जयपुर में अन्तर्राष्ट्रीय भगवद्गीता सम्मेलन का आयोजन हुआ। स्वामी प्रज्ञानन्द जी सरस्वती ने गीता पर प्रवचन किए।
- श्री बलवंतसिंह जी पांची 93 वर्ष के वरिष्ठ स्वयंसेवक हैं। पू. तनसिंहजी के जन्म शताब्दी वर्ष में संघ का परिचय और पू. तनसिंहजी का परिचय देने हेतु आप गाँवों में सम्पर्क कर रहे हैं। दस गाँवों में सम्पर्क हो चुका है। इस आयु में भी आप सक्रियता से सम्पर्क हेतु उतरे हैं।
- अवाय (जैसलमेर) के श्री गणपतसिंह जलदाय विभाग से सेवानिवृत हुए हैं। आजकल सेवानिवृति पर जान पहचान वालों को भोज देने की परिपाटी सी बन गई है। लोग भी इसकी उम्मीद लगाए रखते हैं। श्री गणपतसिंह ने इसको सुन्दर रूप देने के लिये कार्यक्रम को सीमा सद्भाव सम्मेलन के रूप में मनाया। संघ की बात हुई, शताब्दी वर्ष की जानकारी तथा निमंत्रण दिया गया।

सब कुछ अधूरा हमें मिला, सब कुछ पूरा दूसरों को-यह मृगतृष्णा है। जीवन का दिग्भ्रम है। जीवन का सबसे बड़ा सत्य है अपूर्णता। मैं, तुम, वे सब अपूर्ण, अपने में सब अधूरे। इस अपूर्णता का समन्वय, इस अधूरे पन का सदुपयोग ही जीवन की सबसे बड़ी कला है।

– कन्हैयालाल मिश्र

चलता रहे मेरा संघ

(भवानी निकेतन, जयपुर में आयोजित उच्च प्रशिक्षण शिविर-2023 में माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर द्वारा 18.5.2023 को प्रदत्त स्वागत उद्‌बोधन)

कुलदेवी के रूप में क्षत्रिय कुल का कल्याण करने वाली माँ भगवती दुर्गे, तुझे नमस्कार है... क्षात्रधर्म परम्परा और संस्कृति के प्रतीक परम पूज्य केसरिया ध्वज, तुम्हें भी नमस्कार है... श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक और मेरे जीवन के सम्बल एवं प्रेरक पूज्य तनसिंहजी को भी नमस्कार है और उनका अनुसरण करने वाले आप सब लोगों को नमस्कार है।

''रहिमन यह घर प्रेम का,..रहिमन यह घर प्रेम का खाला का घर नाहिं, शीश उतारे भुई धरे सो पैठे घर माहिं।'' क्षत्रिय युवक संघ के बारे में आपसे भी बहुत सारे प्रश्न पूछे जाते होंगे, मुझे भी पूछे जाते हैं। हम समझाना चाहें तो विस्तार से इस बात को नहीं समझा सकते जितना सरलता से रहिमन ने समझा दिया है। क्षत्रिय युवक संघ क्या है? यह घर है प्रेम का! आसान काम नहीं है। खाला का घर नाहिं... खाला कहते हैं भुआ या मौसी को। शीश उतारे भुई धरे सो पैठे घर माहिं.....ऐसा त्याग, ऐसा समर्पण.....अपने समाज के प्रति, अपने धर्म के प्रति, अपने राष्ट्र के प्रति और संपूर्ण मानवता के प्रति अपना जीवन न्योछावर कर देते हैं। वे इस बात को समझ सकते हैं, वे इस घर में प्रवेश कर सकते हैं। केवल उछल-कूद, केवल तमाशे, केवल प्रदर्शन से क्षत्रिय युवक संघ समझ में नहीं आ सकता। इसमें गहरा पैठना हो, अपने आपको बिसारा जाए, जो अपने आपको भूल कर इस घर में आता है वह अपने जीवन को संवार लेता है।

यह अटकलबाजियों से नहीं समझा जा सकता। इसका हो करके ही हम समझ सकते हैं। दो-तीन गीत आपने गाये....कितने मार्मिक थे। क्षत्रिय युवक संघ क्या है, उन गीतों का सार है। आप में से कई लोगों ने तो कभी इनमें से कुछ गीत सुने भी नहीं होंगे। एक गीत तो ऐसा, जो तनसिंह जी ने अन्तिम रूप से लिख दिया। इसके बाद में तनसिंह जी ने कोई गीत नहीं लिखे। 'ओ तेरी आँख का इशारा, बड़ी दूर था किनारा, आए वेग से'...कौन कह रहा है, किसको कह रहा है, इस बात पर मैं चर्चा नहीं करूंगा। यह आपको ही समझना है। क्या मुझसे कहा जा रहा है? ऐसा विचार करें तो कर सकते हैं आप और वह समझने का प्रयास आपका सफल भी हो सकता है।

आप इस संसार में अपने आप आए हैं या किसी ने भेजा है? कोई सत्ता है जो हमारा संचालन कर रही है, बाहर और भीतर। क्या हम विचार कर सकते हैं कि उस सत्ता ने ही हमको यह शरीर प्रदान किया है। और हम कौन? हम कहेंगे हम राजपूत, हम कहेंगे हम हिन्दू, हम कहेंगे हम भारतवासी, यह पर्याप्त नहीं है। समझना पड़ेगा। निश्चित रूप से जिसने हमारा सृजन किया है, जिसने हमारा पालन किया है, रक्षण किया है, उसको हमारी शॉर्टसाइड हमको नहीं बता सकती। हम कहेंगे हमारे माता-पिता ने हमको पाला है, सरकारी स्कूलों में पढ़े हैं, इसलिए सरकार ने हमको पाला है, यह राहत कैंप चलाकर के हमको बचाया जा रहा है, यह ऊपरी चाकचिक्य है। दुनिया को जवाब देना हम छोड़ दें। दुनिया को ना हम जवाब दे सकते हैं ना दुनिया हमारी बात को समझ सकती है। क्षात्रधर्म क्या है, हम समझा नहीं पाएँगे। वो हमारे जीवन में कहीं दिखाई देगा तो समझा पाएँगे। हमारे पूर्वजों में क्षात्रधर्म दिखाई देता था। जो दूसरों की रक्षा के लिये अपने प्राणों को न्योछावर कर दे, ऐसी कोई कौम जिसका यह स्वभाव बन गया हो, दूसरों को दुःखी ना देखने का जिसका स्वभाव बन गया हो और ऐसे में तड़फ उठे जो अन्दर से, वो क्षत्रिय है।

कितना दुराचार हो रहा है, अत्याचार हो रहा है, भ्रष्टाचार हो रहा है, अनाचार हो रहा है, बलात्कार हो रहा है। कहाँ है क्षत्रिय? क्या पुलिस इसको रोक सकती है? क्या कार्यपालिका इसको रोक सकती है, कि न्यायपालिका रोक सकती है या विधायिका रोक सकती है? यह कोई नहीं रोक पाएँगे। यह क्षात्रधर्म का जो भाव है...क्षत्रिय का जो भाव है...'क्षताति कल त्रायते, इति क्षत्रिय..' जो क्षय से बचाए इस संसार को वो क्षत्रिय है। हर राजपूत क्षत्रिय नहीं है। क्षत्रिय और राजपूत में भेद हमको समझना पड़ेगा। जो इस प्रकार का जीवन जीता है, जो दूसरों के लिये जीता है..यह जीवन सार्थक उसी का है जिसने किसी को दे दिया है। हमने क्या अपना जीवन किसी के लिये अर्पित कर दिया है? निश्चित रूप से हम ढूंढेंगे तो पाएँगे कि हमारे पूर्वजों ने इस प्रकार के काम किए थे। तो कहाँ गए वो पूर्वजों के संस्कार? कहाँ गए वो आदर्श? अपनी ही खेह में खो गए। उनको ढूँढ-ढूँढ करके, उनके आदर्शों को ढूँढ-ढूँढ करके, उनके चरित्र को ढूँढ-ढूँढ करके, उनके संस्कारों को ढूँढ-ढूँढ करके, उनका संग्रह करना पड़ेगा अपने जीवन में। क्षत्रिय युवक संघ का यही काम है।

यह कोई सामाजिक काम नहीं है, यह कोई संगठन का काम नहीं है। यह किसी के विरुद्ध नहीं है, उन बुराइयों के विरुद्ध है जिससे संसार त्रस्त है। 'त्रस्त प्राणी वेदना में करुण क्रंदन कर रहे।' हमको क्या वह क्रंदन सुनाई पड़ता है? नहीं पड़ता है तो हम क्षत्रिय नहीं हैं प्यारे बन्धुओं! हम किस लिए जीते हैं? हम तो अभी पेट के लिये जीते हैं, हम तो बाल बच्चों के लिये जीते हैं, हम तो नौकरी के लिये जीते हैं। इन सबकी भी आवश्यकता है। भूखे भजन न होय गोपाला। रोटी तो कमानी पड़ेगी और हमारे पूर्वज भूखे नहीं मरते थे। महाराणा प्रताप के बारे में कहा जाता है कि वो... घास की रोटी खाई...यह एक अलंकार है, यह रूपक है, ऐसी कोई परिस्थिति ही नहीं आई। नैनो सो अमर्‌यो चीख पड्यो... यह साहित्यिक कल्पना है। बीस माताएँ थी उनकी.... महाराणा प्रताप की... वो उनके साथ रहती थी, उनको छोड़कर के, भग करके कोई जंगल में नहीं छुप गए थे। अनेकों पत्नियाँ थी उनकी। अमरसिंह नाम का लड़का था लेकिन इतना छोटा नहीं था जो वन बिलाव से डर जाए।

उन्होंने जो किया वह अनुकरणीय है। सराहनीय है, इससे काम नहीं चलेगा, प्रशंसनीय है, इससे काम नहीं चलेगा। पूरा भारतवर्ष गर्व करता है उनके जीवन पर, महाराणा सांगा के जीवन पर, दुर्गादास के जीवन पर, शिवाजी के जीवन पर, गुरु गोविन्द सिंह के जीवन पर, जिन्होंने समाज के लिये, राष्ट्र के लिये, धर्म की रक्षा के लिये अपने आपको अर्पित किया। बहुत कष्ट भोगे उन्होंने। सिर कटाए उन्होंने, अपने बेटों को मरते हुए देखा उन्होंने और इसीलिए तनसिंहजी ने कहा 'ओ कौम के सितारों, ओ राष्ट्र के वीरों...' पहचानो अपने आपको। जिस दिन पहचान जाओगे, उस दिन आप अपने आपको पा जाएँगे, परमेश्वर को पा जाएँगे, जो जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य है। अन्तिम लक्ष्य है आत्मा और परमात्मा का मेल, जीव और परमात्मा का मेल।

जीव जब कोई शरीर धारण करता है तो आत्मा... परमेश्वर से भटक जाता है और पता नहीं कितनी योनियों... कहते हैं कि चौरासी लाख योनियों में घूमता-घूमता, भटकता हुआ, भोगता हुआ..वो जिसको वो सुख कहता है वो सुख नहीं दुःख भोग रहा है। कुत्ता जब हड्डी को खाता है तो वह हड्डी ही उसके मसूड़ों में लगती है, खून टपकता है, उसको वह चाटता है और सोचता है इस हड्डी में बड़ा खून है, यह मेरे लायक है। ऐसा ही हमारा जीवन हम जी रहे हैं। कोई सुख नहीं है इसमें। उसका परिणसाम न शान्ति है, न सुख है, न समृद्धि है। और ईश्वर को प्राप्त करने के मार्ग में आने

वाली कठिनाइयों को पार करने पर उसके जीवन में सुख भी आता है, शान्ति भी आती है और समृद्धि भी आती है। इस ग्यारह दिन के शिविर में इन सब बातों पर न्यूनाधिक चर्चाएँ होंगी। आप लोग जागरूक रहें, अपने जीवन के लक्ष्य को समझें। हिन्दुओं के, राजपूतों के, इन झगड़ों में ना पड़ें।

हम इस धरती पर क्यों आए? कोई काम दिया गया, वो काम किए बिना घर चले गए तो फिर चौरासी लाख की यात्रा करनी पड़ेगी। कहते हैं चौरासी लाख योनियों में से नौ लाख तो मनुष्य जाति की योनियाँ हैं। किस-किस तरह के मनुष्य हैं? यह जो दिखते हैं...हम जो यहाँ खड़े हैं...यह उत्कृष्ट कोटि की योनि है मनुष्य की। और निकृष्ट कौन है? जो क्षत्रिय युवक संघ की बात को यदि नहीं समझ सके तो हम भी वो निकृष्ट योनि हैं और जिस दिन इसको समझ जाएँगे, उत्कृष्ट योनि बन जाएँगे, यही ऋषियों ने कहा है, यही मुनियों ने कहा है, यही शास्त्रों ने कहा है, यही वेदों ने कहा है, यही उपनिषद में कहा है, यही गीता में कहा है और ये बातें हमको अच्छी नहीं लगती।

आप लोग कई बार गीता लोगों को भेंट देते हैं... उसे पकड़ के और आले में रख देते हैं। ये जीवन में उतारने की चीजें हैं। गीता हमारे जीवन में कैसे आए? महाभारत का वो एक हिस्सा है और इसलिए लोग कहते हैं कि जो महाभारत को पढ़ता है, उसके जीवन में महाभारत हो जाता है। ऐसा नहीं है। महाभारत में गीता है जो जीवन का उद्धार करती है। धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे, यह धर्मक्षेत्र क्या है, कुरुक्षेत्र क्या है? हमारे जीवन में जब धर्म का पदार्पण होता है और उसके अनुसार हमारा कार्य प्रारम्भ होता है तब वही धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र बन जाता है। कुछ इसका उल्टा अर्थ करने वाले भी हैं कि कौरवों का जो क्षेत्र था वह कुरुक्षेत्र था। हो सकता है... उनका शायद सोच ऐसा हो सकता है। हमने तो गीता से पाया है वो यही पाया है-कर्मक्षेत्र। गीता में कर्म की बात कही है। कर्मयोगी बनें, तो आप धर्मयोगी भी बन जाएँगे और स्वयं योगी भी बन जाएँगे। भगवान योगेश्वर कृष्ण जो स्वयं योगी थे और दूसरों को योगी बनाने की स्थिति में थे, आपको ऐसे योगी बनना है। कितना विरोध हुआ उनके जीवन में, राम के जीवन में, इन महापुरुषों के जीवन में, ये नाम हमको बड़े प्यारे लगते हैं। पर वह बनने में बड़ा जोर आता है।

यह यदि आप लोगों में क्षमता हो कि उस जोर को हम सहन करेंगे, उस दुख को, उस कष्ट को सहन करेंगे, तो कुछ का तो पता इस शिविर में ही चल जाएगा कि कितना कष्ट सहन कर सकते हैं। जान-बूझकर के किसी को कोई कष्ट नहीं दिया जाएगा। कष्ट अपने आप आते हैं। कोई कहते हैं भगवान ने हमको क्यों दु:ख दिया है? भाग्य में हमारे यह दु:ख क्यों लिखे गए हैं? न भाग्य का कोई विधाता है, न भगवान किसी को दुख देता है। राम किसी को मारे नहीं, नहीं हत्यारा राम, अपने आप मर जाते हैं करके खोटे काम। तो उन खोटे कामों को हमें पहचानना पड़ेगा जिनको हम दुर्गुण कहते हैं और जो दुर्गुणों का भण्डार है वह असुर कहलाता है और जो सद्गुणों का भण्डार है वह सुर कहलाता है, देवता बन जाता है। जो देने का भाव रखता है वह देवता है, जो लेने ही लेने का भाव रखता है वह राक्षस है। इन दिनों में ये सारी बातें आपके सामने आएगी। भगवान करें... आप पर कृपा करें और वो भगवान कहीं बाहर नहीं बैठा है, वो आपके हृदय में बैठा है। आपके ही नहीं ये कीड़े-मकोड़े सबके, सांप वगैरा, इन सबके हृदय में बैठा है। हम यह सोचते हैं कि वो हमको क्यों खा जाता है? कोई किसी को नहीं खाता। इनका भोजन कुछ और है, मनुष्य इनका भोजन नहीं है। लेकिन हम खोटे काम करेंगे तो वो भी हमको खा जाएँगे। तो जीवन में कौनसे ऐसे कार्य हैं.. व्हाट इज टु बी डन एण्ड व्हाट नॉट टु बी डन... ये विवेक आपके जीवन में आए, मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ। जय संघ शक्ति। यही आपका स्वागत है।

गतांक से आगे

पूज्य श्री तनसिंहजी (के सम्बन्ध में)

''जो कुछ देखा, समझा व अनुभव किया''

– चैनसिंह बैठवास

आय के अनुरूप व्यय हो तो आय और व्यय का संतुलन बना रहता है। इस संतुलन को बनाये रखना जितना सोचते हैं, उतना दुष्कर नहीं, सम्भव भी है। जो व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को, अपने आराम और सुख-सुविधाओं में थोड़ा परिवर्तन कर मर्यादित कर दे यानि वो अपने जीवन यापन की आवश्यकताओं को न्यून करने में कामयाब हो जाए तो उसके लिये कोई असम्भव नहीं, सम्भव है, पर आम तौर पर देखा जाता है कि लोगों की आय के स्रोत तो सीमित हैं और उनकी आवश्यकताएँ बहुमुखी हैं। ये बढती आवश्यकताएँ उनके जीवन में कष्ट और दु:ख का कारण बनती हैं। सामान्य व्यक्ति अपनी उपभोग की सीमा को बढाते-बढाते आय से अधिक कर लेते हैं जिसके परिणाम-स्वरूप उनके जीवन में आने वाला हर छोटा-बड़ा कष्ट उनके दु:ख का कारण बनता है।

पूज्य श्री तनसिंहजी का जीवन अत्यन्त सादगीपूर्ण था। उनकी भौतिक आवश्यकताएँ नगण्य थी। उनका सादा जीवन और उच्च विचार ही उनकी पहचान थी। उनका सादगीपूर्ण यह जीवन लोगों में आकर्षण का केन्द्र बन गया। उनके इस सादगीपूर्ण जीवन की एक घटना है जिसका वर्णन यहाँ किया जा रहा है –

1962 में पूज्यश्री तनसिंहजी प्रथम बार सांसद बन संसद में पहुँचे तो दूसरे सांसदों ने उनकी वेशभूषा देखकर उन्हें अनपढ समझा। खाकी साफा, खाकी आधी बाँह की कमीज, मटमैली लट्ठे की धोती तथा बिना पालिश की देशी जूती, यही तो उनकी पोशाक थी। संसद के केन्द्रीय कक्ष में उन्हें अनमना-सा बैठा जानकर एक श्वेत वसन सांसद सदस्या समीप आई और कहने लगी-यह कपड़े घर पर ही पहना करो। संसद के लिये कुछ सफेद वस्त्र बनवा लो। कुछ क्षण ठहर कर पूछा-कुछ पढे हो? तनसिंहजी का उत्तर था-सिर्फ बी.ए., एल.एल.बी.। महिला सुनकर अवाक रह गई। वह झेंपते हुए तुरन्त वहाँ से चल पड़ी।

पूज्यश्री तनसिंहजी की सादगी का प्रभाव उनके साथ चलने वालों के जीवन पर भी पड़ा और यह स्वाभाविक ही था। जो जैसी संगति में रहता है, जिस वातावरण में रहता है, उसका प्रभाव उसके जीवन में पड़ता ही है। पूज्यश्री के साथ चलने वाले उनके अनुयायियों के जीवन में भी यह सादगी प्रविष्ट कर गई और उनकी आवश्यकताएँ स्वत: ही कम हो गई। खाना, कपड़े, आवास, शिक्षा तथा जीवन के अनेक अन्य दायित्वों में इस सादगी की झलक उनके साथ चलने वाले अनुयायियों में देखने को मिलती है।

आज की परिस्थिति में जीवन यापन की आवश्यकताओं को न्यून रखना समय की माँग है। पर पूज्य श्री तनसिंहजी ने केवल यह सोचकर इस मार्ग पर अपने साथियों को नहीं चलाया बल्कि इसलिए भी कि इस नश्वर शरीर की साज-सज्जा से कुछ हासिल तो होना नहीं, लोक दिखावे के दृष्टिकोण से भी देखें तो ये सब अर्थहीन, व्यर्थ है, इससे कुछ बनना-बिगड़ना तो है नहीं फिर क्यों यह फिजूल का अड़ंग-बड़ंग।

यह तो तय है कि सादगी जब जीवन में प्रविष्ट करती है तो सुख-चैन लेकर ही आती है और संघ के जिन स्वयंसेवकों के आचरण में यह सादगी आयी, साथ में उनके जीवन में भी सुख-चैन लेकर आयी है। यह भी तय है कि जो शारीरिक सुख-सुविधा, आराम व लोक दिखावे में उलझा रहा और रहेगा उसके लिए आत्मशान्ति का रास्ता सदैव अगम्य बना रहेगा।

पूज्यश्री तनसिंहजी ने अपनी आवश्यकताएँ सदैव न्यून ही रखी। वे प्रतिष्ठित पदों पर रहते हुए भी–चाहे वकील के पद पर रहे, चाहे नगरपालिका अध्यक्ष पद पर रहे, चाहे विधायक रहे, चाहे प्रतिपक्ष दल के नेता रहे, चाहे सांसद रहे, उन्होंने अपनी आवश्यकताओं को दृढतापूर्वक सीमित रखा और उसी का परिणाम था कि किसी भी प्रकार का अभाव उनके मार्ग में कभी भी बाधा नहीं बन पाया।

पूज्य श्री तनसिंहजी ने अपनी आवश्यकताओं को सदैव न्यूनतम ही रखा। इसका परिणाम यह हुआ कि उनके साथ रहने वालों ने भी अपनी न्यूनतम आवश्यकताओं में जीवन निर्वहन करना सीख लिया। पूज्य श्री न्यूनतम आवश्यकताओं में ही जीवन निर्वहन करते थे, इसकी पुष्टि सन् 1967 की एक घटना से होती है।

सन् 1967 में लोकसभा चुनाव हारने के बाद उनके सामने अपने एवं अपने साथ रहने वालों की आजीविका का संकट खड़ा हुआ। इस संकट से उबरने के लिये पूज्यश्री ने कई प्रयोग किए जिसमें एक प्रयोग खेती करना भी था। पूज्य श्री ने सिवाणा के निकट कुछ जमीन खरीदी एवं उस पर खेती करना प्रारम्भ किया। सिवाणा में किराए पर एक मकान लेकर अपने 3–4 साथियों के साथ वहीं रहने लगे। उन दिनों में बाड़मेर के जिला कलेक्टर अपने प्रशासनिक दौरे में सिवाणा आए, तो उन्हें पता चला कि बाड़मेर–जैसलमेर के पूर्व सांसद भी यहीं रहते हैं, तो वे मिलने चले आए। कलेक्टर साहब से बातचीत के दौरान उनके लिए चाय बनाकर लाई गई, लेकिन चाय का केवल एक ही कप लाया गया। कलेक्टर ने पूछा कि आपकी चाय कहाँ है तो किसी बहाने से टाल दिया और उन्हें चाय पिलाकर रवाना कर दिया। वैसे तो यह एक सामान्य घटना ही है लेकिन इसके पीछे जो रहस्य छिपा है वह यह है कि उस मकान में रहने वाले सभी लोगों में केवल पूज्यश्री तनसिंहजी के लिये ही चाय बनती थी, इसलिए एक ही कप था। जब दूसरे कप की आवश्यकता ही नहीं थी तो क्यों खरीदा जाए। इससे बढकर एक बात यह भी थी कि जब एक ही व्यक्ति चाय पीने वाले हैं तो चाय बनाने की तपेली भी अलग से क्यों खरीदी जाए। एक लोटा था उसी में चाय बनाई जाती थी और उसी लोटे में चाय बनाकर उस दिन कलेक्टर को परोसी गई थी।

खेती के प्रयोग के साथ पूज्य श्री तनसिंहजी ने निजी व्यवसाय भी प्रारम्भ किया। आर्थिक संकट से उबरने के लिये उनका यह एक और प्रयोग था। अब उन्होंने व्यापार के क्षेत्र में हाथ डाला और उन्होंने इसे नाम दिया ''क्षत्रिय बन्धुत्व''। क्षत्रिय बन्धुत्व नामक सहकारी संस्था बनाकर व्यवसाय प्रारम्भ किया जिसमें उनको व उनके साथ काम करने वालों को समान वेतन मिलता था। इस व्यवसाय में पूज्य श्री तो मालिक थे, फिर भी उस व्यवसाय में पूज्य श्री का भी निश्चित वेतन तय था और उसी वेतन के अनुसार वे अपनी आवश्यकताओं को न्यूनतम कर अपने सहयोगियों के समक्ष न्यूनतम आवश्यकताओं में जीवन निर्वाह का उदाहरण बने हुए थे।

श्री क्षत्रिय युवक संघ 1946 में स्थापित हुआ और 1971 में अपने 25 वर्ष पूर्ण होने पर रजत जयन्ती मना रहा था। रजत जयन्ती की तैयारियाँ चल रही थी, उस समय के गणमान्य लोगों को रजत जयन्ती में बुलाया गया–जिसमें महाराणी गायत्री देवी जयपुर, राजमाता कृष्णा कुमारी व महाराजा गजसिंह जोधपुर मुख्य थे। संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंहजी इस रजत जयन्ती कार्यक्रम में मुख्य आकर्षण के केन्द्र थे। और यह कार्यक्रम 'मारवाड़ राजपूत सभा भवन' जोधपुर में होने जा रहा था। अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखने वाले पूज्यश्री तनसिंहजी के कोट ने सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया, जो कोहनी पर से फटा हुआ था। साथियों ने नया कोट सिलवाने का आग्रह किया तो उनका जवाब था कि दुकान से मुझे इतना वेतन नहीं

मिलता कि मैं नया कोट सिलवा सकूँ। उनके इस जवाब पर गौर कीजिये, वे उस व्यवसाय के मालिक थे। उन्होंने अपने एवं साथियों के जीवन निर्वाह के लिये वह व्यवसाय प्रारम्भ किया था। सभी साथी संघ के स्वयंसेवक थे और उनका ही आग्रह था कि वे नया कोट बनवा लें लेकिन उनका जवाब उनके बड़प्पन का द्योतक ही नहीं बल्कि साथियों के लिये और हम सबके लिये प्रेरणा का स्रोत है। उनके उस जवाब में संदेश था कि जीवन जीने की शर्तें हम तय करते हैं और उन शर्तों के अन्तर्गत अपने आपको बाँधना ही आत्मानुशासन कहलाता है और यही आत्मानुशासन व्यक्ति को श्रेष्ठता की ओर प्रवाहित करता है।

''अपनी पहुँच बिचारी कै करतब करिए दौर।
ते ते पाँव पसारिये जेती लम्बी सौर।।''

सन्त वृन्द जी कहते हैं कि व्यक्ति को पहले अपने सामर्थ्य का आंकलन करने के पश्चात ही अपना लक्ष्य साधना चाहिए ताकि वह अपने लक्ष्य को पाने में सफल हो सके। सामर्थ्य का सही आंकलन किये बिना लक्ष्य की लालसा उसी प्रकार है जैसे चादर से बाहर पैर पसारना। उपभोग हमेशा तय सीमाओं के अन्दर होना चाहिए और ऐसा होने पर ही व्यक्ति कष्टों में भी प्रसन्न रहने की कला सीख सकता है।

(क्रमश:)

प्रसन्न दाम्पत्य

– छनुभा पच्छेगाँव

एक प्रेमाल दंपती थी। ऐसे तो सभी रीति से दंपती सुखी थी, लेकिन उनके कोई संतान नहीं थी। विवाह के ग्यारह वर्ष बाद उनके यहाँ पुत्र का जन्म हुआ। अब तो दोनों की खुशी का कोई पार ही न रहा।

पति एक दिन सुबह अपने कार्यालय जाने को तैयार होकर निकल रहा था, तब उसने एक दवा की बोतल खुली पड़ी हुई देखी। क्योंकि अपने कार्यालय जाने की जल्दी में वह था अत: अपनी पत्नी से बोला-यह बोतल खुली हुई पड़ी है, इसे बन्द करके अलमारी में रख देना। रसोई के काम में लगी होने के कारण वह बोतल अलमारी में रखने की बात भूल गई। उसी अवधि में उनका नन्हा बच्चा उस बोतल के पास पहुँचा। बाल-सुलभ क्रिया में उस बच्चे ने बोतल को हाथ में ले ली। बोतल के अन्दर हरे रंग की दवा थी, जिसे उसने शरबत माना क्योंकि ऐसे ही रंग का शरबत उसको उसकी माँ ने कई बार पिलाया था। बोतल को मुँह पर लगाकर बच्चा उसे गटागट पी गया। बोतल की दवा ने बच्चे पर भारी असर किया। उसकी माँ रसोई का काम समेटकर जब बाहर आई तो देखा कि बच्चा तो बेहोश अवस्था में पड़ा हुआ है। पास में ही दवा की बोतल को खाली पड़ी देखा तो वह घबरा गई और तुरन्त बच्चे को उठाकर टैक्सी से अस्पताल ले गई।

डॉक्टर देखभाल शुरू करे, उससे पहले ही बच्चे ने प्राण त्याग दिए। बच्चे की माँ बहुत डर गई कि अब वह पति को क्या जवाब देगी। वह अत्यधिक चिंतित हो गई। पति को जब मालूम पड़ा तो वह अस्पताल आया। अपने प्रिय पुत्र को मृत-प्राय देखकर वह अपनी पत्नी के पास आया और उसकी पीठ पर हाथ रखकर उसने पत्नी को सांत्वना दी और बोला-'तुम मुझे बहत प्रिय हो? ऐसी परिस्थिति में पति का ऐसा व्यवहार उसकी असाधारण समझ बताता है। मानव सम्बन्धों की बाबत उसकी यह समझ अद्‌भुत थी।

बालक तो रहा नहीं। पत्नी को दोष देने से बालक वापस आने वाला है नहीं। बच्चे को खोने का दुख कम नहीं था। इस समय तो पत्नी को खरी जरूरत तो पति के आश्वासन और सहानुभूति की थी। वह उसे पति की ओर से सहजता से मिली। जीवन में आकस्मिक आने वाले दुख को हल्का करने के लिये यह कैसा सहज, समझ से भरा उपाय है। ऐसे व्यवहार से ही दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहती है।

आदर्श व्यक्तित्व दुर्गादास

– जितेन्द्रसिंह

द्वितीय श्रावण शुक्ला चतुर्दशी संवत् 1695 (तदनुसार 13 अगस्त सन् 1638) सोमवार को आसकरण जी की ठुकरानी मांगलियाणी जी के गर्भ से हमारे आदर्श पुरुष दुर्गादास जी का जन्म हुआ। 80 वर्ष, तीन माह और 28 दिन का उनका पूरा जीवन विभिन्न उत्तरदायित्व निभाते हुए संघर्षमय रहा। 17 वर्ष की उम्र में राइका वाली घटना हुई और 20 वर्ष की उम्र में धर्मत के युद्ध में उन्होंने अद्भुत रणकौशल दिखाया। 20 वर्ष तक महाराजा जसवंतसिंह जी के साथ रहकर उनके सौंपे गये हर उत्तदायित्व को निभाया। जसवंतसिंह जी की मृत्यु के पश्चात काबुल से उनके परिवार को लेकर लौटते समय अटक में हाकिम ने रोका लेकिन बलपूर्वक आगे बढकर परिवार को दिल्ली पहुँचाया।

दिल्ली में रूपसिंह किशनगढ की हवेली में जहाँ निवास किया उसको शहर कोतवाल फौलाद खाँ ने सैन्य घेरा लगा दिया और तोपखाना भी साथ लाया। उस घेरे को चीर कर निकले और अजीतसिंह को पहले ही सुरक्षित निकाल दिया। औरंगजेब अजीतसिंह को अपने पास रखकर उसे मुसलमान बनाना चाहता था, इसीलिए उसके आदेश से हवेली को घेरा गया था। जगह-जगह छापामार युद्ध के माध्यम से शत्रु की नींद हराम कर रखी थी। सही कहा है-

दुर्गो आसकरण रो नित उठ बागां जाय।
अमल औरंग रो ऊतरै, छाती घड़का खाय।।

शंभाजी और दुर्गादास जी के चित्र सामने लाए गये तो औरंगजेब का शंभाजी के लिये कहना था कि इस पहाड़ी चूहे को तो मैं संभाल लूंगा, लेकिन दुर्गादास जी के लिये कहा-इस मारवाड़ी कुत्ते ने परेशान कर रखा है। इससे बादशाह पर दुर्गादास जी का खौफ स्पष्ट नजर आता है। अहमदाबाद के सुबेदार अपने पुत्र आजम को पत्र लिखकर कहता है-दुर्गादास हमारा सबसे बड़ा शत्रु है जिसने हमारा चैन छीन लिया है। इसे किसी तरह मारो। सम्मुख युद्ध में इसको मारना मुश्किल है, इसलिए धोखे से मरवाओ। दुर्गादास जी की कैसी दशहत थी औरंगजेब पर यह स्पष्ट है। संधि के नाम पर दुर्गादास जी को बुलाया गया मगर इस षड़यंत्र का पता चलने पर वे वापस लौट आए। पीछा करने वाली सेना से युद्ध में दुर्गादास जी का एक पुत्र घायल हो गया तथा एक पौत्र वीरगति को प्राप्त हुआ।

साधनहीन होते हुए भी 30 वर्ष संघर्ष के रहे। सामने प्रबल शत्रु था और स्वयं अकेले लेकिन धैर्यपूर्वक साथ जुटाते रहे। संघर्ष जारी रखना अनिवार्य था और साथ ही अजीतसिंह की सुरक्षा बनाये रखने का कार्य भी बहुत उत्तरदायित्व पूर्ण था। महाराणा मेवाड़ से सम्पर्क बनाकर बादशाह के थाने लूटकर मेवाड़, जालोर, बिलाड़ा आदि क्षेत्र में शत्रुओं पर भारी मार करते रहे। दुर्गादास जी की विभिन्न गतिविधियों से भयभीत होकर अजमेर के सुबेदार इनायत खाँ ने बादाशह को पत्र लिखा। तब वहाँ की स्थिति को नियंत्रित करने के लिये अधिक सैन्यशक्ति के साथ औरंगजेब अपने पुत्र अकबर को वहाँ लगाया। श्मशान में घोड़े की पीठ पर बैठे-बैठे ही रोटी सेकना पड़े तो परवाह नहीं पर मारवाड़ से ढूंढ़ाड़ तक छापामार युद्धों से औरंगजेब का अमल का नशा उतारते रहे।

पारिवारिक जीवन की पूर्ण उपेक्षा रही परन्तु कर्तव्य पालन में कोई कसर नहीं रखी। शूरवीरता के साथ बिल्कुल विपरीत परिस्थिति में भी अद्भुत धैर्य के साथ कर्तव्य पालन करते रहे। अपनी चतुरता से दुश्मन को भी तोड़ा, पुत्र अकबर के बच्चों को उचित शिक्षा मिले, यह पूरा प्रयास रहा। आदर्श क्षत्रिय का जीवन यापन दुर्गादास जी के व्यक्तित्व को आदर्श रूप का व्यक्तित्व बना देता है।

जन्म कर्म च मे नित्यम्

– जयदयाल जी गोयन्दका

भगवान के जन्म-कर्म की दिव्यता एक अलौकिक और रहस्यमय विषय है, इसके तत्त्व को वास्तव में तो भगवान ही जानते हैं, अथवा यत्किञ्चित् उनके वे भक्त जानते हैं, जिनको उनकी दिव्य मूर्ति का प्रत्यक्ष दर्शन हुआ हो; परन्तु वे भी जैसा जानते हैं, कदाचित वैसा कह नहीं सकते। जब एक साधारण विषय को भी मनुष्य जिस प्रकार अनुभव करता है, उसी प्रकार नहीं कह सकता तब ऐसे अलौकिक विषय को कोई कैसे कह सकता है? इस विषय में विस्तारपूर्वक सूक्ष्म विवेचन रूप से शास्त्रों में प्राय: स्पष्ट उल्लेख भी नहीं मिलता, जिसके आधार पर मनुष्य उस विषय में कुछ विशेष समझा सके। इस स्थिति में यद्यपि इस विषय पर लिखने में मैं अपने को असमर्थ मानता हूँ, तथापि अपने मनोरञ्जनार्थ अपने मन के कुछ भावों को यत्किञ्चित् प्रकट करता हूँ।

भगवान का जन्म दिव्य है, अलौकिक है, अद्भुत है। इसकी दिव्यता को जानने वाला करोड़ों मनुष्यों में शायद ही कोई एक होगा। जो इसकी दिव्यता को जान जाता है, वह मुक्त हो जाता है। स्वयं भगवान ने गीता में कहा है –

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वत:।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन।।

(4/9)

'हे अर्जुन! मेरा जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् अलौकिक है, इस प्रकार जो पुरुष तत्त्व से जानता है, वह शरीर को त्याग कर फिर जन्म को नहीं प्राप्त होता, किन्तु मुझको ही प्राप्त होता है।'

इस रहस्य को नहीं जानने वाले लोग कहा करते हैं कि निराकार सच्चिदानन्दघन परमात्मा का साकार रूप में प्रकट होना न तो सम्भव है और न युक्तिसंगत ही है। वे यह भी शंका करते हैं कि सर्वव्यापक, सर्वत्र समभाव से स्थित, सर्वशक्तिमान भगवान पूर्ण रूप से एक देश में कैसे प्रकट हो सकते हैं? और भी अनेक प्रकार की शंकाएँ की जाती हैं। वास्तव में ऐसी शंकाओं का होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। जब मनुष्य-जीवन में इस लोक की किसी अद्भुत बात के सम्बन्ध में भी बिना प्रत्यक्ष ज्ञान हुए उस पर पूरा विश्वास नहीं होता, तब भगवान के विषय में विश्वास न होना आश्चर्य अथवा असम्भव नहीं कहा जा सकता। भौतिक विषय को तो उसके क्रियासाध्य होने के कारण विज्ञान के जानने वाले किसी भी समय प्रकट करके उस पर विश्वास करा भी सकते हैं, किन्तु परमात्मा-सम्बन्धी विषय बड़ा ही विलक्षण है। प्रेम और श्रद्धा से स्वयंमेव निरन्तर उपासना करके ही मनुष्य इस तत्त्व का प्रत्यक्ष कर सकता है। कोई भी दूसरा मनुष्य अपनी मानवी शक्ति से इसे प्रकट करके नहीं दिखला सकता। भगवान ने कहा है –

भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप।।

(गीता 11/54)

'हे श्रेष्ठ तपवाले अर्जुन! अनन्य भक्ति करके तो इस प्रकार मैं प्रत्यक्ष देखने के लिये और तत्त्व से जानने के लिये तथा प्रवेश करने के लिये अर्थात् एकीभाव से प्राप्त होने के लिये भी शक्य हूँ।'

विचार करने पर यह प्रतीत होगा कि ऐसा होना युक्तिसंगत ही है। प्रह्लाद को भगवान ने खम्भे में से प्रकट होकर दर्शन दिया था, इस प्रकार भगवान के प्रकट होने के अनेक प्रमाण शास्त्रों में विभिन्न स्थलों पर मिलते हैं। सर्वशक्तिमान परमात्मा असम्भव को भी सम्भव कर सकते हैं, फिर यह तो सर्वथा युक्तिसंगत है। भगवान जब सर्वत्र विद्यमान हैं तब उनका स्तम्भ में से प्रकट हो जाना कौन आश्चर्य की बात है। यदि यह

कहें कि निराकार सर्वव्यापक परमात्मा एक देश में पूर्ण रूप से कैसे प्रकट हो सकते हैं तो इसको समझाने के लिये हम अग्नि का उदाहरण सामने रखते हैं, यद्यपि यह संपूर्ण रूप से पर्याप्त नहीं है, क्योंकि परमात्मा के सदृश व्यापक वस्तु अन्य कोई है ही नहीं जिसकी परमात्मा के साथ तुलना की जा सके।

अग्नितत्त्व कारण रूप से अर्थात् परमाणु रूप से निराकार है और लोक में समभाव से सभी जगह अप्रकट-रूपेण व्याप्त है। लकड़ियों के मथने से, चकमक-पत्थर से और दियासलाई की रगड़ से अथवा अन्य साधनों द्वारा चेष्टा करने पर वह एक जगह अथवा एक ही समय कई जगह प्रकट होती है, और जिस स्थान में अग्नि प्रकट होती है, उस स्थान में अपनी पूर्ण शक्ति से ही प्रकट होती है। अग्नि की छोटी-सी शिखा को देखकर कोई यह कहे कि यहाँ अग्नि पूर्ण रूप से प्रकट नहीं है, तो यह उसकी भूल है। जहाँ पर भी अग्नि प्रकट होती है, वह अपनी दाहक तथा प्रकाशक शक्ति को पूर्णतया साथ रखती हुई ही प्रकट होती है और आवश्यक होने पर वह जोर से प्रज्वलित होकर सारे ब्रह्माण्ड को भस्म करने में समर्थ हो सकती है। इस तरह पूर्ण शक्तिसम्पन्न होकर एक जगह या एक ही समय अनेक जगह एकदेशीय साकार रूप में प्रकट होने के साथ ही वह अग्नि अव्यक्त-निराकार रूप में सर्वत्र व्याप्त भी रहती है। इसी प्रकार निराकार सर्वव्यापी विज्ञानानन्दघन अक्रियरूप परमात्मा अप्रकट रूप से सब जगह व्याप्त होते हुए भी संपूर्ण गुणों से सम्पन्न अपने पूर्ण प्रभाव के सहित एक जगह अथवा एक ही काल में अनेक जगह प्रकट हो सकते हैं; इसमें आश्चर्य की कौनसी बात है? इस प्रकार भगवान का प्रकट होना तो सर्वप्रकार से युक्तिसंगत ही है।

कोई-कोई पुरुष यह शंका करते हैं कि भगवान् सर्वशक्तिमान हैं, वे अपने संकल्प-मात्र से रावण और कंस आदि को दण्ड दे सकते थे, फिर उन्हें श्रीराम और श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लेने की क्या आवश्यकता थी? यह शंका भी सर्वथा अयुक्त है। ईश्वर के कर्तव्य के विषय में इस प्रकार की शंका करने का मनुष्य को कोई अधिकार नहीं है तथापि जिनका चित्त अज्ञान से मोहित है, उनके मन में ऐसी शंका हो जाया करती है। भगवान के अवतरण में बहुत-से कारण हो सकते हैं, जिनको वस्तुत: वे ही जानते हैं। फिर भी अपनी साधारण बुद्धि के अनुसार कई कारणों में से एक यह भी कारण समझ में आता है कि वे संसार के जीवों पर दया करके सगुणरूप में प्रकट होकर एक ऐसा ऊँचा आदर्श रख जाते हैं-संसार को ऐसा सुलभ और सुखकर मुक्ति-मार्ग बतला जाते हैं, जिससे वर्तमान एवं भावी संसार के असंख्य जीव परमेश्वर के उपदेश और आचरण को लक्ष्य में रखकर उनका अनुसरण कर कृतार्थ होते रहते हैं।

भगवान के जन्म और विग्रह दिव्य होते हैं, यह बड़े ही रहस्य का विषय है। भगवान का जन्म साधारण मनुष्यों की भाँति नहीं होता। भगवान श्रीकृष्ण जब कारागार में वसुदेव-देवकी के सामने प्रकट हुए, उस समय का श्रीमद्भागवत का प्रसंग देखने और विचारने से मनुष्य समझ सकता है कि उनका जन्म साधारण मनुष्यों की भाँति नहीं हुआ। अव्यक्त सच्चिदानन्दघन परमात्मा अपनी लीला से ही शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म सहित विष्णु के रूप में वहाँ प्रकट हुए। उनका प्रकट होना और पुन: अन्तर्धान होना उनकी स्वतंत्र लीला है, वह हम लोगों के उत्पत्ति-विनाश की तरह नहीं है। भगवान की तो बात ही निराली है। एक योगी भी अपने योगबल से अन्तर्धान हो जाता है और पुन: उसी स्वरूप में प्रकट होकर दर्शन देता है; परन्तु उसकी अन्तर्धान की अवस्था में उसे कोई मरा हुआ नहीं समझता। जब महर्षि पतंञ्जलि आदि योग के ज्ञाता एक योगी की ऐसी शक्ति बतलाते हैं तब परमात्मा ईश्वर के लिये अपने पहले रूप को छिपाकर दूसरे रूप में प्रकट होने आदि

में तो बड़ी बात ही क्या है? अवश्य ही भगवान श्रीकृष्ण का अवतरण साधारण लोकदृष्टि में उनके जन्म लेने के सदृश ही हुआ, परन्तु वास्तव में वह जन्म नहीं था, वह तो उनका प्रकट होना था। श्री शुकदवेजी कहते हैं–

कृष्णमेनमवेहि त्वमात्मानमखिलात्मनाम्।
जगद्धिताय सोऽप्यत्र देहीवाभाति मायया।।

(श्रीमद्भा. 10/14/55)

'आप इन श्रीकृष्ण को संपूर्ण भूतप्राणियों के आत्मा जानें। इस लोक में भक्तजनों के उद्धार के लिये वे ही भगवान अपनी माया से देहधारी से प्रतीत होते हैं।'

जब भगवान दिव्य रूप से प्रकट हुए तब माता देवकी उनकी अनेक प्रकार से स्तुति करती हुई कहती हैं–

उपसंहर विश्वात्मन्नदो रूपमलौकिकम्।,
शङ्खचक्रगदापद्मश्रिया जुष्टं चतुर्भुजम्।।

(श्रीमद्भा. 10/3/33)

'हे विश्वात्मन्! आप शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म और श्री से सुशोभित चार भुजा वाले अपने इस अद्भुत रूप को छिपा लीजिये।' देवकी के प्रार्थना करने पर भगवान ने अपने चतुर्भुज रूप को छिपाकर द्विभुज बालक का रूप धारण कर लिया।

इत्युक्त्वाऽऽसीद्धरिस्तूष्णीं भगवानात्ममायया।
पित्रोः संपश्यतोः सद्यो बभूव प्राकृतः शिशुः।।

(श्रीमद्भा. 10/3/46)

इससे इनका प्रकट होना ही स्पष्ट सिद्ध होता है। गीता में भी भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी ने अर्जुन के प्रार्थना करने पर पहले उसे अपना विश्वरूप दिखलाया, फिर उसकी की प्रार्थना पर चतुर्भुजरूप धारण किया और अन्त में पुनः द्विभुजरूप होकर दर्शन दिये। इससे प्रकट होता है कि भगवान अपने भक्तों की इच्छा के अनुसार उन्हें दर्शन देकर अन्तर्धान हो जाते हैं। इस प्रकार भगवान के प्रकट और अन्तर्धान होने को जो लोग मनुष्यों के जन्म और मरण के सदृश समझते हैं, वे भगवान के तत्त्व को नहीं जानते। अपने जन्म की दिव्यता को दिखलाते हुए भगवान गीता में अर्जुन के प्रति कहते हैं –

अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया।।

(4/6)

'मैं अविनाशी रूप, अजन्मा होने पर भी तथा सब भूत प्राणियों का ईश्वर होने पर भी अपनी प्रकृति को अधीन करके योगमाया से प्रकट होता हूँ।'

इस श्लोक में 'अपि' और 'सन्' शब्दों से भगवान का यह कथन स्पष्ट है कि मेरे प्रकट होने के तत्त्व को नहीं जानने वाले मूर्खों को मैं अजन्मा होता हुआ भी जन्मता हुआ-सा प्रतीत होता हूँ। जब मैं सगुण रूप से अन्तर्धान होता हूँ तब मेरे इस छिपने के रहस्य को न जानने वाले मूर्खों की दृष्टि में मैं अविनाशी, विनाशभाव को प्राप्त होता हुआ-सा प्रतीत होता हूँ। जब मैं लीला से साधारण रूप में प्रकट होता हूँ तब उसका यथार्थ मर्म न जानने वाले मूढ़ों की दृष्टि में मैं सर्वव्यापी सच्चिदानन्दघन परमात्मा सारे भूत प्राणियों का ईश्वर होता हुआ भी साधारण मनुष्य-सा प्रतीत होता हूँ।

उपर्युक्त वर्णन से यह सिद्ध हो जाता है कि भगवान का प्रकट होना और अन्तर्धान होना मनुष्यों की उत्पत्ति और विनाश के सदृश नहीं है। उनका जन्म मनुष्यों के जन्म की भाँति होता तो एक क्षण के अन्दर एक शरीर से दूसरे शरीर का परितर्वन करना, जैसे उन्होंने देवकी और अर्जुन के सामने किया था, कभी नहीं बन सकता।

मनुष्यों के शरीर के विनाश की तरह भगवान के दिव्य वपुका विनाश भी नहीं समझना चाहिये। जिस शरीर का विनाश होता है वह तो यहीं पड़ा रहता है, किन्तु देवी के सामने चतुर्भुज रूप के और अर्जुन के सामने विश्वरूप और चतुर्भुज रूप के अदृश्य हो जाने पर उन वपुओं की वहाँ उपलब्धि नहीं होती। इतना ही नहीं, भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी ने जिस देह से एक सौ

पच्चीस वर्ष तक लोकहित के लिये विविध लीलाएँ की वह देह भी अन्त में नहीं मिला। वे उसी लीलामय वपु से ही परमधाम को पधार गये। इसके बाद भी जब-जब भक्तों ने इच्छा की, तब-तब उसी श्यामसुन्दर शरीर से पुन: प्रकट होकर उन्हें दर्शन देकर कृतार्थ किया। यदि उनके देह का विनाश हो गया होता तो परमधाम पधारने के अनन्तर इस प्रकार पुन: प्रकट होना कैसे बनता?

इससे यह बात सिद्ध हुई कि भगवान का अन्तर्धान होना ही अपने परमधाम में सिधारना है, न कि मनुष्य देहों की भाँति विनाश होना। श्रीमद्भागवत में भी लिखा है-

लोकाभिरामां स्वतनु धारणाध्यानमङ्गलम्।
योगधारणयाऽऽग्नेय्यादग्ध्वा धामाविशत्स्वकम्।।

(11/31/6)

'भगवान योगधारणाजनित अग्नि के द्वारा धारणा ध्यान में मंगल कारक अपनी लोकाभिरामा मोहिनी मूर्ति को भस्म किये बिना ही इस अपने शरीर से परमधाम को पधार गये।'

भगवान का प्राकट्य भूतप्राणियों की उत्पत्ति की अपेक्षा की नहीं, किन्तु योगियों के प्रकट होने की अपेक्षा भी अत्यन्त विलक्षण है। वह जन्म दिव्य है, अलौकिक है, अद्भुत है। भगवान मूल प्रकृति को अपने अधीन किये हुए ही अपनी योगमाया से प्रकट होते हैं। जगत के छोटे-बड़े सभी चराचर जीव प्रकृति के और अपने गुण, कर्म, स्वभाव के वश में हुए प्रारब्ध के अनुसार सुख-दु:खादि भोगों को भोगते हैं। यद्यपि योगीजन साधारण मनुष्यों की भाँति ईश्वर की माया के और अपने स्वभाव के पराधीन तो नहीं तथापि उनका जन्म मूल-प्रकृति को वश में करके ईश्वर की भाँति लीलामात्र नहीं होता। परन्तु परमात्मा किसी के वश में होकर प्रकट नहीं होते। वे अपनी इच्छा से केवल कारणवश ही अवतरित होते हैं, इसीलिये भगवान ने गीता में कहा है-

प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया।। (4/6)

ईश्वर का प्रकट होना उनकी लीला है और जीवों का जन्म लेना दु:खमय है, ईश्वर प्रकट होने में सर्वथा स्वतंत्र हैं और जीव जन्म लेने में सर्वथा परतंत्र है। ईश्वर के जन्म में हेतु है जीवों पर उनकी अहेतु की दया और जीवों के जन्म में हेतु है उनके पूर्वकृत शुभाशुभ कर्म। जीवों के शरीर अनित्य, पापमय, रोगग्रस्त, लौकिक और पाञ्चभौतिक होते हैं एवं ईश्वर शरीर पर परमदिव्य अप्राकृत होता है। वह पाञ्चभौतिक नहीं होता। श्रीमद्भागवत में ब्रह्माजी कहते हैं-

अस्यापि देव वपुषो मदनुग्रहस्य
स्वेच्छामयस्य न तु भूतमयस्य कोऽपि।
नेशे महि त्ववसितुं मनसान्तरेण
साक्षात्तवैव किमुतात्मसुखानुभूते:।।

(10/14/2)

'हे देव! आपके इस दिव्य प्रकट देह की महिमा को भी कोई नहीं जान सकता, जिसकी रचना पञ्चभूतों से न होकर मुझ पर अनुग्रह करने के लिये अपने भक्तों की इच्छा के अनुसार ही हुई है। फिर आपके उस साक्षात् आत्मसुखानुभव अर्थात् विज्ञानानन्दघन स्वरूप को तो हम लोग समाधि के द्वारा भी नहीं जान सकते।'

इससे भी यह बात समझ में आती है कि भगवान का शरीर लौकिक पञ्चभूतों से बना हुआ नहीं होता। वह तो उनका खास संकल्प है, दिव्य प्रकृतियों से बना है, पाप-पुण्य से रहित होने के कारण अनामय अर्थात् रोग से रहित एवं विशुद्ध है। विज्ञानानन्दघन परमात्मा के सगुण रूप में प्रकट होने के कारण ही उस रूप को आनन्दमय कहा है। मानो संपूर्ण अनन्त आनन्द ही मूर्तिमान होकर प्रकट हो गया है, या यों समझिये कि साक्षात प्रेम ही दिव्य मूर्ति धारण कर प्रकट हो गया है। इसी से जो उस आनन्द और प्रेमार्णव श्यामसुन्दर दिव्य शरीर का तत्त्व जान लेता है वह प्रेम में मुग्ध हो जाता है, आनन्दमय बन जाता है। प्रेम और आनन्द वास्तव में एक ही चीज है, क्योंकि

प्रेम से आनन्द होता है। प्रकृति के सम्बन्ध बिना मनुष्य की चर्म-दृष्टि से वे दृष्टिगोचर नहीं हो सकते। इसीलिये परमेश्वर अपनी प्रकृति के शुद्ध सत्त्व को साथ लिये हुए प्रकट होते हैं अर्थात् जिन दिव्य शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध आदि का योगी लोगों को अनुभव होता है, उन्हीं दिव्य धातुओं से सम्बन्ध किये हुए भगवान प्रकट होते हैं, भक्तों पर अनुग्रह कर वे विज्ञानानन्दघन परमात्मा जब अपने भक्तों को दर्शन देकर उनसे वार्तालाप करते हैं, तब अपनी लीला से उपर्युक्त दिव्य तन्मात्राओं को स्वाधीन करके ही वे प्रकट हुआ करते हैं, क्योंकि नेत्र रूप को देख सकता है, अतएव भगवान को रूप वाला बनना पड़ता है, त्वचा स्पर्श को विषय करती है, अतएव भगवान को स्पर्श वाला बनना पड़ता है, नासिका गन्ध को विषय करती है, अतएव भगवान को दिव्य गन्धमय वपु धारण करना पड़ता है। इसी प्रकार मन और बुद्धि माया का कार्य होने से माया से सम्मिलित वस्तु को ही चिन्तन करने और समझने में समर्थ हैं। इसलिये निराकार सर्वव्यापी विज्ञानानन्दघन परमात्मा प्रकृति के गुणों सहित अपने भक्तों को विशेष ज्ञान कराने के लिये साकार होकर प्रकट होते हैं, प्रकृति के सहित उस शुद्ध सच्चिदानन्दघन परमात्मा के प्रकट होने का तत्त्व सबकी समझ में नहीं आता। इसीलिये भगवान ने गीता में कहा है-

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः।
मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम्।।

(7/25)

'अपनी योगमाया से छिपा हुआ मैं सबके प्रत्यक्ष नहीं होता हूँ, इसीलिये यह अज्ञानी मनुष्य मुझ जन्मरहित, अविनाशी परमात्मा को तत्त्व से नहीं जानता है अर्थात् मुझे जन्मने-मरने वाला मानता है।'

(क्रमशः)

माता से बढकर कोई नहीं

नाऽन्नोदक समं दानं न तिथिर्द्वादशी समा।
न गायत्र्याः परोमन्त्रो न मातुः परं दैवतम्।।

- चाणक्य नीति दर्पण

अन्न और जल के समान कोई दान नहीं है, द्वादशी के समान कोई तिथि नहीं है, गायत्री मंत्र से बढकर कोई मंत्र नहीं है और माता से बढकर कोई देवता नहीं है।

भारतीय वैदिक संस्कृति में नारी का स्थान सर्वोपरि सम्मानित है। यह जुदा बात है कि वैदिक काल के बाद धीरे-धीरे पुरुर्ष वर्ग हावी होता गया और नारी को उसने उस सम्मानित स्थान पर न रहने दिया, फिर भी माँ के रूप में नारी सर्वोच्च सम्मानित स्थान बनी ही रही और कुछ अपवादों को छोड़कर आज भी बनी हुई है। नारी के विषय में मनुस्मृति में कहा गया है-**यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता** अर्थात् जहाँ-नारियों का सम्मान होता है वहाँ देवताओं का वास होता है। माँ का स्थान तो सर्वोच्च है। रामायण में कहा-**जननि जन्म भूमिश्च स्वर्गादयि गरीयसी** अर्थात् माता और मातृभूमि का स्थान स्वर्ग से भी ऊँचा है। ऊपर के श्लोक में कहा है कि माता से बढकर कोई देवता नहीं तो महाभारत में कहा है- **नास्ति मातृसमो गुरुः** यानी माता के समान कोई गुरु नहीं है। बात सौ प्रतिशत सही है भी। यह माँ ही है जो नो माह गर्भ में रखकर अपने खून से हमारे शरीर को पालती है-पोसती है और भीषण यंत्रणा सहकर हमें जन्म देती है। इसी की गोद में हम आँखें खोलते हैं, वही हमें बोलना, चलना, खाना-पीना, अच्छे गुण, अच्छे विचार, अच्छी बातें सिखाती है। हमें भाषा ज्ञान देने वाली पहली गुरु माता ही होती है और माता की भाषा ही हमारी मातृभाषा कहलाती है, पितृ भाषा नहीं। माता का वात्सल्य और ममत्व (ममता) ही हमें पाल-पोस कर बड़ा करता है इसलिए हम जब दुख में होते हैं तो भगवान के अलावा माँ का ही नाम मुँह से निकलता है। माँ बड़े कष्ट सहकर हमारा पालन-पोषण करती है इसलिए हम पर सबसे बड़ा ऋण माँ का ही होता है। माँ साक्षात् देवी और तीर्थ स्वरूप होती है इसलिए हमें माँ का न केवल सम्मान ही करना चाहिए बल्कि जीवन पर्यन्त उसकी सेवा करके उसका आशीर्वाद लेना चाहिए।

परमवीर पीरूसिंह

– बिग्रेडियर मोहनलाल (से.नि.)

कम्पनी हवलदार मेजर (C.H.M.) पीरूसिंह का जन्म 20 मई, 1918 के दिन राजस्थान के झुन्झुनू जिले के बेरी गाँव में राजपूत (शेखावत) योद्धा के घर हुआ था। उन्हें बचपन से ही देश सेवा का जुनून था। अत: 18 वर्ष की आयु में 20 मई, 1936 को 10/1 पंजाब रेजीमेन्ट में भर्ती होकर 1937 में 5/1 पंजाब रेजीमेन्ट में तैनात हो गये। भारत के विभाजन के बाद उन्हें 6 राजपूताना राइफल्स में स्थानान्तरित कर दिया गया।

1948 में जम्मू और कश्मीर की लड़ाई के दौरान भारतीय सैनिक तिथवाल सेक्टर में प्रतिरक्षात्मक मोर्चे बनाकर हमारे इलाके में अधिकार जमाए हुए थे। उस समय पाकिस्तानी रेडर्स ने भारतीय सेना पर शक्तिशाली हमला करके भारतीय सेना के अग्रिम ठिकानों को पीछे हटने के लिये मजबूर कर दिया। इसके बाद भारतीय सेना ने अपनी फौजी टुकड़ियों को तिथवाल की पहाड़ी पर तैनात कर दिया। इस समय 6 राजपूताना राइफल्स को तिथवाल सेक्टर को मजबूत करने के लिये ऊड़ी सेक्टर से स्थानान्तरित किया गया। उसी समय मालूम हुआ कि दुश्मन उस इलाके में दो बड़ी पहाड़ी चोटियों पर मोर्चा संभाले हुए था, अत: इन पहाड़ी चोटियों पर कब्जा करना जरूरी था। इसलिए इन चोटियों पर कब्जा करने की जिम्मेदारी 6 राजपूताना राइफल्स को दी गई। 'डी' कम्पनी को तिथवाल के दक्षिण की पहाड़ी चोटी पर कब्जा करने की जिम्मेदारी दी गई।

18 जुलाई, 1948 को रात्रि के 1.30 बजे 6 राजपूताना राइफल्स ने दुश्मन पर हमला करना प्रारम्भ किया। जब दुश्मन के नजदीक पहुँच गये तक दुश्मन ने सभी दिशाओं से जानलेवा गोलाबारी और मशीन गनों से फायरिंग शुरू कर दी। अग्रणी प्लाटून (30 सैनिक) भारी गोलाबारी की चपेट में आ गये और बहादुर प्लाटून कमाण्डर सूबेदार भीकासिंह गम्भीर रूप से घायल हो गये। कम्पनी हवलदार मेजर पीरूसिंह प्लाटून के सेकण्ड-इन-कमांड (2 IC) थे, अत: उन्होंने तुरन्त कमान सम्भाली और दुश्मन की भारी गोलाबारी और मशीन गन फायरिंग के बीच अपने प्लाटून और अग्रणी सेक्शन को लेकर अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प के साथ दुश्मन पर टूट पड़े। दुश्मन के सैनिक अपने बंकरों में सुरक्षित घुसे हुए थे और दृढ़ता से बचाव कर रहे थे। परन्तु बहादुर पीरूसिंह को अपने उद्देश्य को हासिल करने में कोई रोक नहीं सका। पीरूसिंह बुरी तरह घायल हो गये थे और उनके आधे से ज्यादा सैनिक घायल हो गये थे या शहीद हो गये थे फिर भी अपनी जान की परवाह किये बिना, वे दुश्मन के उस मशीन गन के बंकर के ऊपर तुरन्त पहुँचे गये, जिसने उनके हमले को रोक रखा था। फिर उसी बंकर के अन्दर घुस करके सभी दुश्मन सैनिकों को मार दिया और जला दिया। इस समय पीरूसिंह अपने सेक्शन के इकलौते जीवित सैनिक अधिकारी थे और चेहरे से खून बुरी तरह टपक रहा था। फिर भी अपने हाथों और घुटनों के बल चलते हुए अगले बंकर पर पहुँचकर वहाँ के सभी दुश्मन सैनिकों को भी मार दिया। जब वे तीसरे बंकर की तरफ जा रहे थे तब दुश्मन की गोली उनके सिर में लगी और उन्हें तीसरे बंकर के पास गिरते हुए देखा। इसके तुरन्त बाद एक विस्फोट हुआ, जिससे पता चला कि उन्होंने आखिरी दम में दुश्मन पर हथगोला फेंका था वह भी फट गया। इस तरह से योद्धा पीरूसिंह ने दुश्मन से लड़ाई लड़ी और अपनी रेजीमेण्ट की सर्वश्रेष्ठ परम्परा के अनुसार बहादुर नायक की तरह देश के लिये अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

परमवीर पीरूसिंह ने 'वीर भोग्या वसुंधरा' की परम्परा के अनुसार मातृभूमि के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। मातृभूमि की सेवा के लिये उनका अदम्य साहस, बहादुरी और प्राणोत्सर्ग के लिये उन्हें सर्वोच्च वीरता पदक 'परमवीर चक्र' से सम्मानित किया गया। पराक्रम दिवस के अवसर पर 23 जनवरी, 2023 को अंडमान-निकोबार में एक द्वीप का नाम परमवीर पीरूसिंह के नाम किया गया। आज हम विनम्रतापूर्वक उनके प्रति हमारी श्रद्धा प्रकट करते हैं और उनकी वीरता से गौरवान्वित हैं तथा उनके सैनिक मूल्यों से सदा प्रेरणा लेते रहेंगे।

गतांक से आगे

महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा

– भँवरसिंह मांडासी

(तृतीय अध्याय)

तिलहर से अजमेर आगमन :

देश की स्वाधीनता हेतु अंग्रेज सत्ता के विरुद्ध किए गए संघर्ष के परिणामस्वरूप प्रदत्त सजा का पाँच वर्ष का समय जेल तथा नजरबंदी में बिताकर राव गोपालसिंह 26 मार्च, 1920 को तिलहर से प्रस्थान करके 27 मार्च को अजमेर पहुँचे। अजमेर नगर की जनता ने अपने प्रिय नेता का अभूतपूर्व स्वागत किया। उनके स्वागत में जनता द्वारा उछाली गई गुलाल से स्टेशन से नया बाजार तक नगर की सड़कें लाल हो गई। दूसरे ही दिन 28 मार्च को अजमेर में–''दिल्ली–अजमेर मेरवाड़ा प्रान्तीय परिषद'' का जलसा होने वाला था। परिषद के संयोजकों ने राव गोपालसिंह को उस जलसे का प्रथम दिन के लिये अध्यक्ष बनाकर उन्हें अपना स्नेह और आदर समर्पित किया। अध्यक्ष पद से दिया गया उनका भाषण ऐतिहासिक था। भाषण की प्रकाशित प्रतियाँ आज भी उपलब्ध हैं, जिनके अवलोकन से उनकी राजनैतिक प्रतिभा का मूल्यांकन किया जा सकता है। उक्त परिषद के दूसरे दिन के अध्यक्ष बैरिस्टर आसिफ अली थे। उन्होंने भी अपने भाषण में देशहित में की गई राव गोपालसिंह की सेवा और त्याग की भरपूर तारीफ की।

अजमेर से खरवा आने पर खरवा और आसपास के गाँवों की जनता खरवा रेल्वे स्टेशन पर उमड़ पड़ी। अति उत्साह और उमंग से भरी भीड़ ने घोड़े हटाकर उनकी बग्गी को अपने कंधों पर खींचा और रेल्व–स्टेशन से खरवा तक दो मील के मार्ग को आनन–फानन में पार कर लिया। उस दिन खरवा में बड़ी खुशियाँ मनाई गई। मकानों पर राम के अयोध्या आगमन की तरह से दीये जलाकर रोशनी की गई। दुकानदारों ने बाजार को सुन्दर तरीकों से सजाकर खुशियों का इजहार किया। अभूतपूर्व संकट को पार करके राव साहब खरवा आये थे।

दूसरे वर्ष ''दिल्ली–अजमेर मेरवाड़ा राजनैतिक परिषद'' का जलसा 14 मार्च, 1921 को अजमेर में सम्पन्न हुआ। सभा की अध्यक्षता पं. मोतीलाल नेहरू ने की। उक्त सभा में स्वागताध्यक्ष की हैसियत से राव गोपालसिंह ने भाषण दिया। उक्त समारोह में आमन्त्रित देश के नेताओं में श्रीमती कस्तूरबा गाँधी और मौलाना शौकत अली भी थे, जिन्हें राव गोपालसिंह के पास खरवा भवन में ठहराया गया था। मौलाना शौकत अली उसी समय राव साहब के पगड़ी बदल भाई बने थे।

कांग्रेस से मोह भंग :

राव गोपालसिंह सशस्त्र क्रान्ति द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति में विश्वास रखने वाले व्यक्ति थे। दक्षिणी अफ्रिका के नेटाल प्रान्त से आकर गाँधीजी ने भारतीय राजनीति में प्रवेश किया, तब भारतीय कांग्रेस में दो दल बन चुके थे। लोकमान्य तिलक के उग्र विचारों को मानने वालों का गरम दल और गाँधीजी की अहिंसक विचारधारा को मानने वालों का नरम दल। अंग्रेजों को सशस्त्र क्रान्ति से देश से बाहर करने में आने वाली अनेक कठिनाइयों को ध्यान में रखकर गाँधी जी ने अहिंसा और असहयोग का नया मार्ग देशवासियों को दिखलाया। सशस्त्र क्रान्ति का मार्ग वास्तव में बड़ा कठिन था। तलवार की धार पर चलने जैसा था। क्रान्तिकारियों को गोली खाने या फांसी के तख्ते पर चढने के लिये हरदम तैयार रहना पड़ता था। गाँधीजी के अहिंसात्मक असहयोग, जिसे वे सत्याग्रह कहते थे, के नये प्रयोग में न फांसी की सजा का डर था और न गोली से उड़ाये जाने का अंदेशा। अहिंसक आन्दोलन में बन्दी बनाये जाने वाले

सत्याग्रहियों को सुख-सुविधा के साथ जेलों में रखा जाता और उनके खान-पान एवं स्वास्थ्य-रक्षा का छोटे बालकों की भाँति पूरा ध्यान रखा जाता था। देश की बहुसंख्यक जनता को यह मार्ग निरापद और सुलभ प्रतीत हुआ।

गत ढ़ाई हजार वर्षो से केवल एक सैनिक वर्ग को छोड़कर अधिकांश जन अहिंसा धर्म के प्रचार-प्रसार से प्रभावित शान्त वातावरण में रहते हुए, संघर्ष विहीन मार्ग की तरफ अधिक उन्मुख हो चुके थे। संघर्ष का उनके जीवन में पूर्ण आभाव हो चुका था। ऐसी दीर्घकाल से चली आ रही अहिंसक परम्परा में पालित-पोषित भारतीयों को अपनी ओर आकृष्ट करने में गाँधीजी के उस मार्गदर्शन ने चमत्कारिक काम किया। लोकमान्य तिलक सन् 1920 में दिवंगत हो चुके थे। परलोकगमन के समय उन्होंने ''यदा-यदा ही धर्मस्ये, ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानम् धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।'' कहते हुए शास्त्रोक्त भगवत अवतरण व पुनर्जन्म में अपने दृढ़ विश्वास को व्यक्त किया था।

सन् 1922 ई. से गाँधीजी की अहिंसात्मक नरम विचारधारा ने कांग्रेसजनों को अत्यधिक प्रभावित किया और धीरे-धीरे सन् 1930 ई. तक भारतीय कांग्रेस केवल गांधीवादी कांग्रेस बनकर रह गई। उग्रवादी विचार दर्शन को मानने वाले वीर सावरकर, डॉ. मुन्जे, भाई परमानन्द, लाला लाजपतराय, राव गोपालसिंह खरवा, बारहठ केशरीसिंह कोटा, अर्जुनलाल सेठी जयपुर जैसे तपे हुए त्यागी और तपस्वी क्रान्तिकारी नेता जो अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन की लचीली और नरम नीति में आस्था नहीं रखते थे, सन् 1922/23 से ही कांग्रेस से दूर हटते चले गये।

''पूर्वाधुनिक राजस्थान'' के लेखक प्रख्यात इतिहासकार डॉ. रघुवीरसिंह सीतामऊ (मालवा) ने इस संदर्भ में लिखा है-''महात्मा गाँधी के बढ़ते हुए प्रभाव और कांग्रेज की नीति में परिवर्तन के साथ ही राजस्थान के राजनीतिक नेता भी बदलने लगे। अपने राजपूत प्रधान विचारों के कारण राव गोपालसिंह को यह नयी राजनीतिक कार्यप्रणाली किसी भी प्रकार रुचिकर न हुई और वह उससे उदासीन हो गये।''

''राजस्थान केसरी'' का सम्पादन करने के बाद नीति सम्बन्धी मतभेद होने पर बारहठ केसरीसिंह ने उसका सम्पादन छोड़ दिया और हिंसापूर्ण उग्र राजनीति का यह समर्थक भी धीरे-धीरे राजनीतिक क्षेत्र से दूर ही होता गया। उन दोनों के साथ ही राजस्थान के समस्त राजपूत समाज तथा उससे सम्बद्ध अन्य सारी योद्धा जातियों का भी प्रान्त तथा देश की इन सब राजनीतिक प्रवृत्तियों से पूर्ण सम्बन्ध-विच्छेद हो गया और अब वे राजनीति से बिल्कुल तटस्थ रहने लगे, जिससे आगे चलकर राजस्थान की प्रान्तीय राजनीति में भी कई एक अनुपेक्षणीय उलझनों का उठना सर्वथा अवश्यम्भावी हो गया। बीजोलिया आंदोलन के बाद राजस्थान में गाँधीवादी नेताओं का महत्त्व बढ़ने लगा, जिससे सन् 1919 ई. के बाद सशस्त्र, क्रान्ति के लिये राजस्थान में पुन: कोई विशेष क्रियात्मक प्रयत्न नहीं किए गये। (पूर्वाधुनिक राजस्थान पृष्ठ 196, 197)

कांग्रेस को हिन्दू हितों के विपरीत दिशा में जाते देखकर पं. मदनमोहन मालवीय भी उससे हटकर हिन्दू जाति की सेवा में लग गये थे। राव गोपालसिंह की मालवीयजी के प्रति असीम श्रद्धा थी और उनके द्वारा संचालित हिन्दू हित साधक कार्यों में वे सदैव उनके समर्थक व सहयोगी बने रहे। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के समय राव साहब ने अपनी आय के अनुरूप सहायता प्रदान की थी।

कांग्रेस की गाँधीवादी विचारधारा में समाहित न होने के कारण उनका झुकाव हिन्दू महासभा की तरफ हुआ। हिन्दू हितों के संरक्षण के लिये हिन्दू सभा जैसी संस्था का होना वे अनिवार्य मानते थे। हजारों वर्षों से अहिंसा को ही मोक्ष का मार्ग मानते आ रहे हिन्दू समाज में क्षात्रवृत्ति का लोप होकर वैश्यवृत्ति ने जड़

(शेष पृष्ठ 24 पर)

महाशक्ति प्राकट्य-श्री माल्हण बाई

– नरसिंह माल्हणसर

यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

उक्त श्लोक श्री गीताजी से उद्धृत है जिसमें स्पष्ट संदेश है कि जब से सृष्टि की रचना हुई है तब से ही सर्वत्र सत और तम के मध्य संघर्ष जारी है सत सत्य, धर्म, न्याय, नीति और तम यानी असत्य, अधर्म, अन्याय, अनीति आदि, यह संघर्ष व्यष्टि से समष्टि तक सर्वव्यापक भी है और अनेकों बार तम सत पर हावी होता आया है। हालांकि अन्ततः जीत तो सत की ही हुई है और आगे भी सत्यमेव जयते ही रहेगा। ऐसा हमारे पूजनीय ग्रन्थ श्री मुण्डक उपनिषद के मंत्र 3.1.16 में उल्लेख है। पर उसके लिये स्वयं परम सत्ता शक्ति को प्रकट होना पड़ता है और धर्म और नीति की पुनर्स्थापना होती है। अधर्म अनीति का सर्वनाश कर दिया जाता है ऐसी सनातन परम्परा रही है, जिसे अवतार कहा जाता है यथा-मत्स्य अवतार, कूर्म अवतार, वराह अवतार, नृसिंह अवतार, वामन अवतार, राम अवतार, कृष्ण अवतार, परशुराम अवतार, बुद्ध अवतार और कल्कि अवतार। हमारे शास्त्रानुसार उक्त दस प्रमुख अवतार माने गए हैं इसके अलावा भी हिन्दुस्तान के कण-कण में देवत्व प्रकट होता रहा है, वह भी उसी अवतार परम्परा की अनवरत शृंखला में आता है, जिसमें हमारे साधु-संत, ऋषि-मुनि, महात्मा, सिद्ध, योगी, सन्यासी, वीर योद्धा, जती, सती, शक्ति, देवी आदि अन्यान्य रूपों में मानव देह धारण कर सनातन संस्कृति और धर्म का संरक्षण करते रहे हैं, जिसका प्रभाव इहलोक छोड़ने के बाद भी युगों-युगों तक रहता है। जनमानस उनके बताये मार्ग और मूल्यों का अनुकरण करते रहते हैं। उनके नाम मात्र में इतना तप और तेज होता है कि उनके स्मरण व पूजा-अर्चना व स्तुति करने से हमें सम्बल मिलता है जिसे इष्ट बल कहा जाता है। इष्ट बल से सामर्थ्य असीम हो जाता है। जैसा कि महिषासुर संग्राम के दौरान देवताओं के सामुहिक आह्वान पर माँ दुर्गा के स्वरूप का शक्ति प्राकट्य हुआ उसके बाद जगदम्बा ने समय-समय पर अवतार लेकर आसुरी प्रवृति का नाश किया और भक्तों का संरक्षण किया। क्षत्रियों ने हमेशा माँ भवानी को याद कर रणक्षेत्र में हुंकार भरी और माँ ने अपरोक्ष रूप से मातृ तुल्य कृपा बनाये रखी। इस तरह मान्यता है कि देवी के छोटे-मोटे नौ लाख अवतार हुए हैं इसीलिए स्तुति में ''नवलाख लोहड़ीयाळी'' नाम से बिरदाया जाता है।

जगदे परमार का शीश दान और शक्ति प्राकट्य :

शक्ति अवतार की पावन परम्परा को अक्षुण बनाये रखने के लिये परमार वंश के त्यागी, तपस्वी वीरों ने अपनी अनन्य भक्ति से साक्षात जगदम्बा को अपने कुळ में ही बारम्बार प्रकट (अवतार) होने के लिए विवश कर दिया, तभी कहा जाता है भगवान से भक्त बड़ा होता है बशर्ते संपूर्ण समर्पण हो। ऐसा ही एक प्रसंग है जिसमें राजा भोज परमार के पड़पौत्र राजा जगदे परमार ने सिद्धराव जयसिंह सोलंकी द्वारा दान देने की होड़ में कंकाली माता को अपना शीश समर्पण कर दिया। यथा-

संवत् नवो नवासीयो, तिथि तेरस वार रविवार।
जगदे शीश समापीयो, प्रण धारी परमार।।

फलस्वरूप देवी से अपने कुळ में अवतार लेने का वर प्राप्त किया। देवी ने प्रसन्न होकर कहा-जब तक मेरे कन्या स्वरूप (सुआसळी) को ब्याह रचाकर दूसरे घर अपने आँगन से विदा नहीं करोगे तब तक परमार वंश में मेरे अवतार होते रहेंगे। वरदान अनुसार पहला अवतार राजा जगदे के यहाँ वांकलदे के रूप में हुआ उसके बाद अलग-अलग समय में सोहाय, हंसावती, माल्हणदे, सच्चियादे, लालरदे और रूपादे। लोक मान्यता अनुसार रूपादे को अन्तिम अवतार माना गया है क्योंकि रूपादे

का विवाह मालाणी के मल्लीनाथ राठौड़ से हुआ और पिता ने अपने आँगन से विदाई दी, इसके साथ ही देवी द्वारा दिया गया वचन पूरा हुआ उसके बाद परमार वंश में शक्ति अवतार नहीं माना जाता।

उक्त अवतारों में माल्हणदे अवतार की महिमा पश्चिमी राजस्थान, गुजरात व सिंध क्षेत्र में अत्यधिक है जहाँ छत्तीस कौम का जनमानस अटूट श्रद्धा के साथ लोक देवी के रूप में पूजता है, उसमें भी उन्हें 'माल्हण बाई' के नाम से ज्यादा जाना जाता है जिनके विराट स्वरूप के प्राकट्य की ऐतिहासिक जानकारी संक्षिप्त में निम्न प्रकार से है–

माल्हण बाई का वंश परिचय :

माल्हण बाई का अवतार उज्ज्वल परम्परा वाले परमार वंश में हुआ। परमार वंश की उत्पत्ति अग्नि कुण्ड आबू से हुई। अधिकांश समय तक आबू, धार व उज्जैन परमारों की राजधानियों के केन्द्र रहे। इस संदर्भ में एक पद्य प्रचलित है–

पृथ्वी परमारां तणी, पृथ्वी तणा परमार।
एक आबूगढ़ बैसणो, दूजौ उज्जैनी धार।।

कालान्तर में परमारों ने अपनी शक्ति एवं सुशासन से मारवाड़, सिंध क्षेत्र में स्थाई ठिकाने स्थापित किये। इस दौरान के एक राजा धरणीवराह का नाम आज भी लोक साहित्य में त्याग और भ्रातृत्व प्रेम की एक मिशाल के रूप में याद किया जाता है, जिसने विरासत में प्राप्त पूरे साम्राज्य को अपने नौ भाइयों में बाँटकर उस पर नौ कोट (दुर्ग) बनाकर बराबर बटवारा किया। तब से मारवाड़ को नवकोटी मारवाड़ कहा जाने लगा जिसकी निम्न पंक्तियाँ साक्षी हैं–

हुओ लुद्रवै भाण, मण्डोवर हुओ सांवत
गढ़ पूगल गजमाल, अजमेर अजेसिंह
जोगराज धर धाट, हुआ हांसू पारकर
आलपाल अरबुद, भोजराज जालंधर
नवकोट किराडू, जुग परमार थाप्यो
धरणीवराह धर भाईयां बांट जु जु कियो

परमार राजा मात्र चक्रवर्ती सम्राट ही नहीं हुए बल्कि जीवन के हर क्षेत्र यथा भक्ति, शक्ति, ज्ञान, विद्या, कला, त्याग, बलिदान आदि में पराकाष्ठा स्थापित की जिसे आज तक कोई लांघ नहीं सका। जैसे राजा वीर विक्रमादित्य (विक्रम संवत प्रारम्भ किया) राजा धारावर्ष, राजा भोज, राजा जगदे, राजा भर्तहरि, धरणीवराह, राजा चन्दन, राणा काच्छवा आदि के किस्से कहानियाँ आज भी जनमानस में जीवन्तता दर्शाती है। राजा चन्दन दानवीर का एक दोहा प्राय लोक कलाकारों की जिह्वा के अग्र भाग पर रहता है, वह है–

होड़ न कीधी हिन्दवै समै नमायो शीश।
करोड दे दांतण कियो, चन्दन वर्ष चौबीस।।

माल्हण बाई का अवतार :

राजा वीर विक्रमादित्य की 25वीं पीढी में राजा भोज हुए जिनकी राजधानी धार (मालवा) रही। भोज के पड़पौत्र महादानी राजा जगदे हुए। राजा जगदे के पड़पौत्र राजा हांसू हुए जिनकी राजधानी पारकर (पारीनगर सिंध) रही। राजा हांसू के पौत्र हुए राजा वेरू (वेरीसाल) जिनकी राजधानी रही जानरागढ़ (माडप्रदेश) जो वर्तमान में जैसलमेर जिला है। राजा वेरू परमार के यहाँ वि.सं. 12वीं सदी के पूर्वार्द्ध में एक चमत्कारिक कन्या का अवतार हुआ जो आगे जाकर महाशक्ति माल्हण बाई के नाम से जगत में, शताब्दियों से लोकदेवी के रूप में हिन्द और सिंध में प्रसिद्ध है। राजा वेरीसाल परमार के दो पुत्र जागा और वरण थे जो माल्हण बाई के भ्राता हैं। जागाजी से परमारों की शाखा जागा चली जिनकी मूल जागीर जानरागढ़ रही। वरणजी से परमारों की शाखा वरण बनी जिनकी मूल जागीर वरणा गाँव रही। वेरीसालजी के शेष पुत्र अन्य वर्णों में परिवर्तित हो गए। हरयाजी जागा देवी के अनन्य भक्त हुए जिन्होंने जानरागढ़ से जाकर घाट (पाक में) वि.सं. 1455 में हरयार नाम से जागीर स्थापित की। हरयाजी के समकालीन अमरकोट पर राणा अवतारदे की जागीर थी इससे सम्बन्धित एक पद्य भाट साहित्य में प्रचलित है –

हरयो हरयाणै, अमराणै अवतार
दोय धाट धजबंधी, पृथ्वी बड़ा परमार

माल्हण नाम का अर्थ :

माल्हण शब्द डिंगल भाषा से उद्धृत है जिसका हिन्दी अर्थ होता है हर्ष, खुशहाली, मंगल, प्रसन्नता, आनन्द आदि जिसकी व्याख्या महाकवि ईसरदास द्वारा हालां झालां रा कुण्डलियाँ में प्रयुक्त की गई है।

माल्हण बाई के नाम :

जगदम्बा ने अपने भक्तों को जिस रूप में सहायता की और भाव विह्वल होकर भक्तों ने जिस शब्दों से मातेश्वरी के गुणगान किये वैसे-वैसे उनके नामों की शृंखला बढती रही यथा-मालू, माल्हण बाई, माल्हण आई, वेराई, माल्हण माई, गुकुटाली, छतराळी, मांडेची, नवलाख लोहडीयाली, तळै री धणियाणी, चंवरै री धणियाणी, पटोला परमार, जानराराय, हरयारराय, धोळा मढ़ धणियाणी, माल्हणसरराय आदि आदि।

माल्हण बाई के मुख्य धाम एवं मेळे :

वह स्थान जहाँ जगदम्बा के इस संसार में रहते हुए कोई सम्बन्ध रहा हो या बाद में उनके भक्तों की तपस्या स्थली रही हो, जहाँ देवी की पूजा-अर्चना से भावात्मक सम्बन्ध रहा हो, वे स्थान सारे मुख्य धाम कहलाते हैं। माल्हण बाई के मुख्य धाम जानरागढ़ (जैसलमेर) हरयार (धाट-पाक) व धोळा मढ वरणा (जैसलमेर) है। देवी की पूजा अर्चना नियमित प्रत्येक मन्दिर में होती है पर मुख्य धाम पर भादवा सुदी चौदस व माघ सुदी चौदस को मेले भरते हैं जहाँ हजारों की संख्या में श्रद्धालु धोक देते हैं।

माल्हण बाई के वचन सिद्ध सेवक व परचे :

माहल्ण बाई की पूजा अर्चना करने वाले भक्तगणों पर देवी कृपा से वचन सिद्धि होती है जिससे लोक कल्याण के कार्य होते हैं। ऐसी शृंखला में कुछ नाम इस प्रकार हैं -

श्री अणद जागा-जानरा की ओरण गोचर जागीर को लगान मुक्त कराया (महारावळ मूलराज को परचा), हरया जागा-सप्त अकाल भंजन (अमरकोट राणा अवतार को परचा), देदा भोपा-जैसलमेर दरबार के कूट रचित पट्टे खुलवाये व देवी के अन्य भक्तों को कैद से मुक्त कराया, पाता जागा-नगर वीरावा (पाक) को श्राप दिया, धोळूजी, कान्होजी, अमरोजी, जीभोजी आदि भक्त हुए व आसळीया सेठ का डूबता जहाज उबारा, आदि प्रसंग प्रसिद्ध हैं।

जानरा के मालण मन्दिर का निर्माण- वैसे जानरा में स्थित यह मंदिर माल्हण बाई के समय से बना हुआ है। वर्तमान मन्दिर से पूर्व का मन्दिर जैसलमेर महारावल मूलराज द्वितीय (1761-1819 ई.) के द्वारा बनाया हुआ है। जिसके प्रमाण के रूप में मन्दिर परिसर में लगे शिलालेख पर लिखा है-

जैसलमेर महारावल मूलराज द्वितीय का शिलालेख
।। श्री माताजी श्री माल्हण जी रो थान महाराजधिराज महारावलजी श्री मूलराजजी करायो सदा व्रदाता हुवै संवतु 1853 चैत्र सुदि। लिखत जोशी हेमराज।।

माल्हण बाई के अन्य मन्दिर :

माल्हण देवी के भक्त जहाँ-जहाँ अधिक संख्या में हैं वहाँ-वहाँ बड़े मन्दिर हैं और आगे भी बन रहे हैं परन्तु पुराने जमाने में रेगिस्तान में पानी का स्रोत मात्र कुआ ही होते थे वो भी 300 फुट गहरे, ऐसी स्थिति में कम संसाधनों से कुआ को संपूर्ण करना एक बड़ी चुनौती हुआ करती थी। ऐसी विकट वेला में इष्ट देवी ही सहायता कर सकती है, ऐसी मान्यता रही। जिससे कुआ खोदने से पहले माल्हण देवी को विराजमान करते, देवली की थरपना करते फिर कार्य शुरू करते। मान्यता थी जिस कुए (तळै) पर माल्हण बाई की देवली होती वहाँ कभी भी किसी का अशुभ नहीं होता। इसी से देवी का नाम तळै की धणियाळी पड़ा। जब कुए के अन्दर व्यक्ति उतरता उस समय मात्र एक ही सहारा रहता वह था माल्हण बाई का नाम। उससे सम्बन्धित एक जनश्रुति आज भी बुजुर्ग जन सुनाते हैं-

वडी सड़ी री बरत, रळी रो कोस
अभरै गोसीयै मत दयै दोस

इसके अतिरिक्त रोहिडाला (हरसाणी), मगरा कोठा धाम, हरसाणी, झिनझिनयाळी (जैसलमेर), जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, लापूदडा (जालोर) दवाडा, माल्हणसर बीकानेर, संतोषनगर आदि स्थानों पर भव्य मन्दिर हैं।

पेई की महिमा :

हरयार धाम (पाक) में माल्हण बाई की पूजा माल्हण माता व माल्हण आदि नाम से होती है। वहाँ माताजी की मूर्ति झोंपड़े में काष्ठ की पेटी में विराजमान है। पेटी को सिंधि भाषा में पेई कहते हैं। यह पेई हर तीसरे साल खुलती है तभी मातेश्वरी के दर्शन होते हैं। पेटी के जो ताला लगता है उसकी चाबी नहीं है उस दिन ताला अपने आप खुलता है। जब तक ताला नहीं खुलता तब तक भक्तगण बेसब्री से इन्तजार करते रहते हैं। इस परम्परा को चलते लगभग 900 वर्ष हो रहे हैं।

माल्हण बाई का विराट महाशक्ति स्वरूप :

माल्हण बाई की गौरव गाथा का यशगान बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, जालौर, गुजरात से लेकर धाट (सिंध) तक अनवरत सुनने को मिलता है। उनकी इस विराटता की साख उनके गाँव-गाँव बने देवरे, भव्य मन्दिर, विशाल ओरण-गोचर, सेवक-भक्तगण, चिरजावां, भजन, छावलियां, आरतियाँ, परचे आदि की महिमा यहाँ के कण-कण में जन-जन में स्वर लहरी के रूप में गुंजायमान है। जो माहल्ण बाई के अवतार को शक्ति ही नहीं महाशक्ति के रूप में परिलक्षित करती है- यथा-

राजपूतां में राजवी, प्रबल वंश परमार।
माल्हण धरा माड री, आई लियो अवतार।।
धिन हो परमारां धीवड़ी, रग हो जानरै राय।
वेरू घर वीस हथी, अवतरी माल्हण आय।।
जागा वरण जोडरा, बंका बांधव वीर।
जिणरै वास विराजै, सगत दिहारी सीर।।
अणद रो काम कीधो, मुल्क जैसाण बिसारु नाय।
हरयै डेडे समरण कीधो, मैया महर करी आय।।

पृष्ठ 20 का शेष

महान क्रान्तिकारी राव गोपालसिंह खरवा

जमा ली थी। भारत की कतिपय सैनिक जातियों को छोड़कर समस्त हिन्दू जाति विकासमान युरोपीय देशों की नजरों में कायर, डरपोक और द्रव्य लोभी माने जाने लगी थी। राव गोपालसिंह हिन्दू जाति में से क्षात्रवृत्ति का या सैनिक भावना का ह्रास हो जाने को ही इसका मुख्य कारण मानते थे। वे चाहते थे कि भारत की हिन्दू जाति एक योद्धा सैनिक जाति के रूप में विश्व की अनेक योद्धा जातियों में अग्रणी स्थान प्राप्त करे। उनका विचार था कि इस हेतु हिन्दू नवयुवकों को सैनिक शिक्षा दिलाने के लिये सैनिक स्कूलों की स्थापना की आवश्यकता है। उक्त कमी की पूर्ति हेतु डॉ. मुंजे ने नागपुर में-''हिन्दू सैनिक कॉलेज'' की स्थापनार्थ अथक प्रयास किया। राव गोपालसिंह ने राजपूताना के नरेशों से उक्त कार्य हेतु डॉ. मुंजे को आर्थिक सहायता दिलाने के लिये काफी प्रयत्न किया था। मेवाड़ के महाराणा फतेहसिंह ने राव गोपालसिंह के तत्सम्बन्धी अनुरोध पर गौर करके सर्वप्रथम डॉ. मुंजे को यथेष्ट सहायता प्रदान की थी। इसी प्रकार बीकानेर के महाराजा गंगासिंह व जोधपुर के महाराजा उम्मेदसिंह से भी डॉ. मुंजे को ''हिन्दू सैनिक कॉलेज'' स्थापनार्थ सहायता दिलाने में राव साहब खरवा की प्रमुख भूमिका रही थी। (खरवा ठिकाने में सुरक्षित तत्सम्बन्धी रेकार्ड में पत्रों की नकल अवलोकनीय है।)

सन् 1929 ई. में हिन्दू महासभा का वार्षिक अधिवेशन महामना मालवीय जी की अध्यक्षता में कानपुर में सम्पन्न हुआ था। उस अधिवेशन में दिया गया राव गोपालसिंह का भाषण एक दूरदर्शी राजनीतिज्ञ की भविष्यवाणी थी जो 18 वर्ष बाद ही सच्ची साबित हो गई। उक्त भाषण में उन्होंने कांग्रेस की नीति की तीव्र आलोचना करते हुए देश के शीघ्र ही विखण्डित होने की आशंका व्यक्त की थी। जो सन् 1947 में भारत विभाजन होकर पाकिस्तान बनने के रूप में साकार होकर सामने आई। **(क्रमशः)**

गतांक से आगे

आदर्श और अनूठे गाँव

– कर्नल हिम्मतसिंह

अन्कापुर : तेलंगाना

अन्कापुर एक छोटा-सा आत्मनिर्भर, प्राचीन कृषि आधारित गाँव है जो तेलंगाना के जिला निजामाबाद के अरमूर मण्डल में स्थित है। यह गाँव देश के गिने चुने गाँवों में से एक है जहाँ के किसान आयकर दाता हैं। इस गाँव में शहर की सभी सुविधाएँ उपलब्ध होने के कारण लोग इसे मिनी अमेरिका भी कहते हैं। इस गाँव को देश का मॉडल विलेज होने का गौरव प्राप्त है।

यहाँ के किसानों ने खेती के आधुनिक तरीके अपना कर अपनी रचनात्मक सोच से खेती कर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है।

कुछ वर्ष पूर्व यह गाँव भी इस क्षेत्र के अन्य गाँवों की तरह, सिंचाई की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध नहीं होने के कारण अकाल की मार झेल रहा था। निजाम सागर योजना के पूरा होने के पश्चात् और यहाँ के किसानों की रचनात्मक सोच के कारण इस गाँव की दशा सुधरी जिसने इस गाँव को आधुनिक और आदर्श गाँव बना दिया।

सन् 1995 में गाँव के किसानों ने अनाज की फसलों को कम महत्त्व देकर उन्नत किस्म के बीजों की खेती करने का सामूहिक निर्णय लिया जिसकी वजह से कुछ ही समय में इस गाँव की ख्याति विश्वव्यापी हो गई।

शुरुआत में दो किसानों ने यहाँ सीड ट्रीटमेण्ट प्लान्ट लगाये और बाजरा और चारे के बीज तैयार करना प्रारम्भ किया और उसके उपरान्त मक्का, हल्दी और धान के भी बीज तैयार करने लगे और शीघ्र ही राष्ट्रीय बीज के नक्शे पर अपना नाम चिन्हित कर लिया। अब यह गाँव हमारे देश के अन्य राज्यों और विदेशों में भी बीजों का निर्यात करता है। बीज प्रसंस्करण प्रक्रिया (Seed Processing Procedure) फरवरी माह में शुरू होती है और जुलाई के अन्त तक चलती है।

बीज व्यवसाय की सफलता से प्रेरित होकर इस गाँव के किसानों और किसान समितियों ने अन्कापुर में 40 सीड ट्रीटमेण्ट प्लाण्ट्स स्थापित कर लिए हैं। प्रत्येक प्लान्ट का टर्नऑवर करीब 3-4 करोड़ रूपये का होता है। इस प्रकार अन्कापुर में वर्ष भर में 100 करोड़ के बीज तैयार किये जाते हैं। ये प्लाण्ट्स गाँव की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाते ही हैं साथ ही कृषि मजदूरों को रोजगार भी मुहैया करवाते हैं।

यहाँ की खेती के तौर-तरीके सीखने के लिये अफ्रीका, युगाण्डा, श्रीलंका, बांग्लादेश और अपने देश के अनेक राज्यों से कृषि वैज्ञानिक और न्य संबंधित कर्मचारी यहाँ आते रहते हैं।

बीजीय कृषि के अलावा यहाँ सब्जियों की खेती भी बड़े पैमाने पर की जाती है जिसका श्रेय यहाँ की परिश्रमी महिला किसानों को जाता है, जो इस काम में सदैव आगे रहती हैं।

इस गाँव ने मॉडल विलेज के छह अवार्ड जीतकर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। समग्र विकास और सर्वाधिक टैक्स कलेक्शन (18 लाख रूपये आयकर का रिकार्ड भी इसी गाँव का है)।

अगस्त, 2016 में मुख्यमंत्री श्री चन्द्रशेखर राव ने इस गाँव की यात्रा की और लोगों की उनके द्वारा किये गये प्रयासों की बहुत प्रशंसा की और उन्हें प्रोत्साहित किया। उन्होंने इस गाँव को राइस बॉल ऑफ तेलंगाना के अलंकरण से सम्मानित किया। सीड फार्मिंग की सुविधाएँ उपलब्ध कराने और 225 किसानों को 100 प्रतिशत अनुदान के साथ ड्रिप इरीगेशन संयंत्र उपलब्ध कराने का वादा किया। इन सभी अनुपम उपलब्धियों के साथ अन्कापुर ने विश्व पटल पर अपा सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर लिया है।

इस गाँव के किसानों ने वर्षा के अभाव में भी आधुनिक तरीके अपना कर अधिक पैदावार लेने की

कला में भी महारत हासिल कर रखी है। और यही वजह है कि उनको विपरीत परिस्थितियों में भी कभी सरकार की मेहरबानी की दरकरार नहीं रहती है। इन लोगों ने कर्ज माफी की उम्मीद किये बिना कृषि ऋण का भुगतान सदैव समय पर किया है।

अन्कापुर ने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान निकायों जैसे इण्डियन कोंसिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च (KAR) इन्टरनेशनल क्रोप्स रिसर्च इन्स्टीट्यूट फॉर सेमी एरिड ट्रोपिक्स (ICRISAT) एवं इण्टरनेशनल राइस रिसर्च इन्स्टीट्यूट (IRRI) मनीला और फिलीपिन्स से भी मॉडल विलेज होने की मान्यता प्राप्त कर रखी है।

यह तेलंगाना का शायद पहला गाँव है जिसका अपना वैब पोर्टल है जिसको NRIs की मदद से स्थापित कर संचालित किया गया है।

इस गाँव के 500 से अधिक शिक्षित नवयुवक अमेरिका, इंग्लैण्ड और यू.ए.ई. में कार्यरत हैं अथवा ऊँची शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। कृषि उपज के साथ ही विदेशों से प्राप्त धन राशि के कारण इस गाँव की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ है।

यहाँ लोगों की भूमि धारण क्षमता सीमित है, किसी के पास भी दस एकड़ से अधिक जमीन नहीं है, परन्तु यहाँ की औरतें कठिन परिश्रम कर अधिकतम उत्पादन लेने में सक्षम हैं। एक ही फसल की अच्छी पैदावार होने पर गाँव में नई कारों की संख्या बढ जाती है।

यहाँ का लाल ज्वार का विकसित किया हुआ बीज उत्तरी भारत में निर्यात किया जाता है। पाइनीयर, प्रो. एग्रो, गंगा कावेरी, कावेरी, तुलसी और नुजीबीडू आदि बीज कम्पनियों ने अपनी बीज संस्करण इकाइयाँ यहाँ पर स्थापित कर रखी हैं। इन कम्पनियों ने यहाँ की रोजगार की समस्या को भी समाप्त प्राय: कर दिया है।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि इस गाँव में एक भी कच्चा मकान नहीं है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार इस गाँव की आबादी 5689 है और 1520 परिवार यहाँ रहकर 2000 एकड भूमि पर खेती करते हैं। इस गाँव में सफेद राशन कार्ड होल्डर की संख्या बहुत ही कम है।

गाँव के अनुशासन और विकास में विलेज डेवलपमेण्ट कॉंसिल की अहम भूमिका रहती है।

अन्कापुर का चिकन भी बहुत प्रसिद्ध है। यह स्वादिष्ट चिकन करी जो केवल अन्कापुर में ही पकाई जाती है, वह न केवल आन्ध्रप्रदेश में ही प्रसिद्ध है बल्कि अमेरिका और यू.ए.ई. में भी इसकी भारी माँग है। पिछले 30 वर्षों से यह अब ब्राण्ड चिकन रूप में पहचानी जाती है और अब तो इसने अंतर्राष्ट्रीय ट्रेड मार्क भी हासिल कर लिया है।

अकोदरा–गुजरात
कैशलेस गाँव

परिवर्तन का विरोध स्वाभाविक है, परन्तु परिवर्तन के बिना प्रगति भी असम्भव है। शिक्षा के अभाव और रूढ़िवादी प्रवृति के कारण गाँवों में परिवर्तन का विरोध अधिक होता है। इसलिए ऐसा माना जाता रहा है कि गाँव डिजिटल इण्डिया की सबसे बड़ी चुनौती होंगे। लेकिन देश के पहले डिजिटल गाँव गुजरात के साबरकांठा जिले के अकोदरा ने इस मान्यता को गलत साबित कर दिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2 जनवरी, 2015 को इस गाँव को देश को समर्पित किया था।

अहमदाबाद से करीब 90 किलोमीटर दूर बसे इस गाँव की आबादी लगभग 1200 है और यहाँ पर 250 घर हैं। यहाँ के लोग सभी कार्यों के लिये कैशलेस सिस्टम का उपयोग करते हैं। नोटबंदी के दौरान जहाँ पूरे देश में कैश की मारामारी के हालात पैदा हो गये थे तब भी अकोदरा में इसे लेकर कोई परेशान नहीं था।

इस गाँव में हर व्यक्ति के पास डेबिट कार्ड है। सब्जी खरीदने के लिये भी गाँव के लोग मोबाइल बैंकिंग या कार्ड का प्रयोग करते हैं। खास बात यह है कि यह सुविधा यहाँ के लोगों को उनकी मातृभाषा गुजराती में उपलब्ध है।

2015 में ICICI बैंक ने इस गाँव को गोद लिया था। अब यह गाँव डिजिटल तकनीक का प्रयोग करते हुए पूर्ण रूप से कैशलेस हो गया है और अब यह गाँव

देश के डिजिटल गाँवों में शुमार हो गया है। डिजिटल होने के पश्चात गाँव में ई-हेल्थ सेंटर भी खुला है, जहाँ गाँव वालों के मेडिकल रिकार्ड बटन दबाते ही मिल जाते हैं। टेलीमेडिसिन की सुविधा हो जाने के कारण यहाँ बैठे-बैठे दूसरे बड़े शहरों के डाक्टरों की भी राय ली जा सकती है।

अकोदरा में प्राइमरी से लेकर 12वीं तक की शिक्षा के लिये स्कूलों में भी डिजिटल तकनीक काम में ली जा रही है। बैंक की ओर से क्लासरूम में प्रोजेक्टर और कम्प्यूटर आदि दिये गये हैं। इसके अलावा डिजिटल कॉन्टेंट भी उपलब्ध कराये जा रहे हैं। ब्लैक बोर्ड की जगह अब स्मार्ट बोर्ड ने ले ली है, पढ़ाई टी.वी. के जरिये हो रही है और बस्तों में पुस्तकें नहीं है, टेबलेट हैं।

इस गाँव में दूधियों की को-ऑपरेटिव सोसायटी है। यहाँ जो दूध बिक्री किया जाता है उसका भुगतान सीधे उनके खातों में जमा हो जाता है। यहाँ पर पाँच रूपये से अधिक के ट्रांजेक्शन मोबाइल या फिर कार्ड से करते हैं।

कृषि उपज मंडी, गाँव के किसानों द्वारा बेची गई फसल का मूल्य ऑनलाइन चुकाती है। मण्डी एजेण्ट और किसान के बीच सौदा होने के बाद राशि किसान के खाते में जमा कर दी जाती है। गाँव में किसानों को सभी फसलों की जानकारी लाइव मिलती है। इसके लिये ICICI बैंक ने 'रॉयटर्म मार्केट लाइव' से करार किया है। इस जानकारी से किसानों को यह तय करने में मदद मिलती है कि उन्हें अपनी फसल अभी बेच देनी चाहिए या रुकना चाहिए।

अकोदरा गाँव में वाई-फाई कनेक्टिविटी है। जिला विकास अधिकारी की ओर से यहाँ वाई-फाई की सुविधा दी गई है। ग्राम पंचायत में फीस जमा कराकर वाई-फाई की सुविधा ली जा सकती है।

अकोदरा के सफल प्रयोग ने यह सिद्ध कर दिया कि तकनीक बहुत कुछ बदल देती है। लोगों के रहन-सहन से लेकर उनके देखने और सोचने का तरीका सब कुछ बदल सकती है तकनीक। यहाँ के प्रयोग के बाद डिजिटल इण्डिया का सपना और अधिक विश्वसनीय लगने लगा है।

बधुवार : आदर्श गाँव का उत्कृष्ट नमूना

मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर जिले का बधुवार एक ऐसा गाँव है जिसके वजूद को आधुनिक भारत की अरक्षणीय प्रथाएँ न तो गर्त में डाल सकी और ना ही नष्ट कर सकी। फलता-फूलता यह गाँव, ग्राम स्वराज का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है। गाँव को देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे किसी गुलशन का दीदार कर रहे हैं, चारों ओर हरियाली और चमचमाती सड़कें पसरी पड़ी हैं।

इस गाँव में आजादी के उपरान्त अभी तक सरपंच का चुनाव नहीं हुआ है। गाँव के लोग सर्वसम्मति से अपना ग्राम प्रधान चुनते हैं। गाँव में विकास की नींव ग्राम प्रधान स्वर्गीय ठाकुर सुरेन्द्रसिंह ने रखी जिनको लोग आदर से भैया जी कहते थे। वे एक ऐसी हस्ती थे जिसके उत्साह और कार्यक्षमता ने सभी को एक निश्चित दिशा में काम करने के लिये प्रेरित कर रखा था। गाँव के विकास और गाँव वालों के सामूहिक हित के लिये महत्त्वपूर्ण निर्णय सदैव उन्हीं के द्वारा लिये जाते थे। सन् 2012 में भैया जी का निधन हो गया परन्तु गाँव वाले अभी भी उनके सपनों को साकार करने में प्रयत्नशील हैं।

गाँव में सफाई और जल संग्रहण पर विशेष ध्यान दिया जाता है। लगभग 2000 की आबादी वाले इस गाँव के हर घर में शौचालय है। सफाई कर्मियों द्वारा सदैव गाँव की सफाई की जाती है। इस गाँव की सीवर सिस्टम (मल जल निकास व्यवस्था) को अद्वितीय की श्रेणी में डाला जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। निकास व्यवस्था भूमिगत होने से कादे कीचड़ की शिकायत नहीं रहती है और गली कूचे स्वच्छ नजर आते हैं। जल निकासी की व्यवस्था इतनी सुदृढ़ है कि बारिश कितनी भी हो गाँव में पानी कभी नहीं रुकता है। गाँव पूरी तरह मच्छर मुक्त है। जल संचय के लिये नालियों को कुओं से जोड़ा गया है जिनमें पानी इकट्ठा होता रहता है। पहले

पानी की सतह 150 फीट नीचे थी जो अब 130 फीट ऊपर तक आ गई है।

सतत् विकास के लिये संसाधन प्रबंधन बहुत आवश्यक है और यहाँ के युवाओं ने इसका भी एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। पहले यहाँ पर कोई सम्पर्क सड़क नहीं थी। गाँव के लोगों ने मिलकर तीन कि.मी. लम्बी सड़क का निर्माण किया, बाद में सरकार की मदद से यह सीमेन्टेड सड़क बना दी गई।

गाँव की धमनी नदी के पास तालाब बनाया गया है। गाँव में बने सभी घरों की दीवारों पर सामान्य ज्ञान और इतिहास का उल्लेख है। गाँव के विकास के लिये संघ बनाया गया है जिसका सदस्य हर परिवार का एक व्यक्ति है। गाँव के वे लोग जो बाहर नौकरी करते हैं सेवानिवृत्ति के उपरान्त वापस अपने गाँव लौट रहे हैं और गाँव के विकास में अपना योगदान दे रहे हैं और अपना अनुभव साझा कर रहे हैं।

पिछले 50 वर्षों से गाँव में सुबह पाँच बजे प्रभात फेरी निकाली जाती है। भजन-कीर्तन की गूंज से गाँव जागता है। प्रभातफेरी में सभी जाति-धर्म के लोग शामिल होते हैं। इस हेतुं गाँव में रामायण मण्डल नाम से एक मण्डली बनाई गई है। जात-पात के भेदभाव को मिटाने के लिये हरिजनों को गाँव के बीच में हरिजन बस्ती में बसाया गया है। हरिजन बस्ती गाँव की सबसे स्वच्छ और सुन्दर बस्ती है जहाँ गाँव के लोग सुबह शाम घूमने जाते हैं। हर बस्ती के बाहर प्रवेश द्वार है। ये द्वार ग्राम पंचायत ने अपने खर्चे से ही बनवाए हैं।

गाँव के किसान जैविक खेती ही करते हैं। जैविक खाद के लिये गाँव में 20 गड्ढे बनाए गये हैं। गड्ढों में गाँव का कचरा इकट्ठा किया जाता है। जिससे खाद बनाई जाती है। हर वर्ष खाद की नीलामी की जाती है।

एक समुदाय की संचित ऊर्जा का अन्दाज इस बात से लगाया जा सकता है कि 2000 की जनसंख्या वाले बधुवार गाँव में वर्तमान में 35 ट्रेक्टर्स, 51 गोबर गैस संयंत्र, गन्ना पिराई की 75 मशीनें, 25 हैण्ड पम्प और बहुत संख्या में थ्रेसर्स इस गाँव में उपयोग के लिये उपलब्ध हैं। यहाँ उपलब्ध संसाधन इस गाँव की जरूरतों से अधिक है जो इस गाँव की सुदृढ़ आर्थिक स्थिति के परिचायक हैं।

गोबर गैस के मामले में यह गाँव पूरे प्रदेश में सबसे आगे है। सभी घरों में गोबर गैस की मदद से खाना पकाया जाता है। यह गाँव प्लास्टिक और पॉलीथीन से भी बचकर रहता है।

100 फीसदी वाटर हार्वेस्टिंग, मिनी इनडोर स्टेडियम और स्विमिंग पूल विकास की गाथा खुद-बखुद बयाँ करते हैं।

आमतौर पर लालफीताशाही के भय से सरकारी योजनाओं के प्रति लोगों की सोच नकारात्मक रहती है परन्तु यहाँ ऐसा नहीं है। बधुवार निवासी सरकारी योजनाओं और अनुदान के बारे में पूर्ण जानकारी रखते हैं और इसका पूरा फायदा भी उठाते हैं।

यह गाँव निर्मल ग्राम घोषित किया जा चुका है और 2012 में इसे राष्ट्रपति ने पुरस्कृत किया था।

इस गाँ की उपलब्धियों को मध्यनजर रखते हुए माया विश्वकर्मा ने ''बधुवार स्वराज मुमकिन'' शीर्षक की एक पुस्तक लिखी जिसका लोकार्पण अप्रेल, 2016 में हुआ था। इसी भावना से प्रेरित होकर वरिष्ठ पत्रकार और फिल्म निर्माता पंकज शुक्ला ने एक डाक्यूमेन्ट्री फिल्म ''स्वराज मुमकिन है'' बनाकर इसका प्रदर्शन 7 अगस्त, 2016 को सिलिकॉन वैली के शहर 'सेन जोस' (San Jose) के फेस्टिवल ऑफ ग्लोब में किया। स्व. ठाकुर सुरेन्द्रसिंह का सपना उस दिन देश और विदेश में जाना जाने लगा है।

स्व. ठाकुर सुरेन्द्रसिंह के निधन के बाद उन्हीं के अनुज ठाकुर नरेन्द्रसिंह ने अपने ज्येष्ठ भ्राता के स्वप्न को साकार करने का बीड़ा उठाया और जन भागीदारी से सफलता हासिल की। बधुवार में वे सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं जो एक विकसित शहर में होती हैं। यहाँ के ग्रामीणों ने मिलकर एक ऐसे गाँव का निर्माण किया है जो देश के अन्य गाँवों के लिये प्रेरणा स्वरूप हो सकता है।

इस गाँव में संस्कृत भाषा का भी प्रचुर मात्रा में प्रचार प्रसार है। **(क्रमशः)**

रोना छोड़िये, पसीना पौंछ लीजिए

– स्व. उम्मेदसिंह खिंदासर

उस दिन भभूत जी के यहाँ उनके पुत्र की सगाई की पार्टी थी। गिने चुने लोग ही बुलाए गए थे। कारण भी स्पष्ट था। क्षत्रिय युवक संघ की तर्ज पर टीका प्रथा के अनुसार रोकड़ी रुपया बिल्कुल नहीं लिया गया। अत: भारी लवाजमे सहित प्रदर्शन से परहेज किया गया था।

फिर भी फल, सूखे मेवे, मिठाई और बेसों की भरमार बता रही थी कि सामन्ती रुचि अब भी सिर पर चढ़कर बोलती है। उमेश जी ने इशारा भी किया कि– जब टीका टमका ही नहीं लेना था तब यह सब दिखावा फिजूलखर्ची नहीं है तो क्या है? पर आए हुए सगे सम्बन्धी अचकचाए तो जरूर किन्तु घूर कर देखने के सिवाय बोले कुछ नहीं।

ओढावणी भी हमने हमारे यहाँ भू भाग में बन्द कर रखी थी। पर वे कम्बल वगैरह लाए थे और जिद्दपूर्वक वे भी उन्होंने जैसे-तैसे देने में सफलता प्राप्त कर ली। क्योंकि वे तो टीका नहीं लेने को ही जबर्दस्त राहत महसूस कर रहे थे। अब रात्रि भोज का समय आया। शराब के विरुद्ध हम लोग काफी समय से प्रचार कर रहे थे। बड़ी मुश्किल आई। सगे सम्बन्धी शेखावत थे। साहब ये तो शादी-विवाह में पीने पिलाने के ही शौकीन ठहरे, वरना इनका तो जीमन ही बेकार जावेगा। आखिर बैठे लोगों में से ही किसी ठाकुर ने तर्क निकाला,-आपका निर्णय तो विवाह पर लागू होता है यह तो सगाई है। और पीने वाले जिनकी संख्या ज्यादा थी सबने जोर से हाँक लगाई, हाँ-हाँ, बस हो गया निर्णय। सगाई पर अभी तक कोई लाग नहीं है। उमेश जी को भी परिस्थिति की नाजुकता के सामने नतमस्तक होना पड़ा।

आखिर एक बीच की बेंच पर उमेश जी सहित पाँच व्यक्ति शेष रहे। बाकी सब लालपरी के मदमस्त नृत्य को देखकर उत्फुल्ल झूम उठे।

जब दो चार पैग गले के नीचे से उतर गए, तब एक ठाकुर आँखों में खुमारी भरकर खीझ के स्वर में गरजते हुए बोले-''किस समाज की बात करते हैं। बाकी सब जातियाँ अपने किसी नुमाइन्दे को थोड़ा बहुत भी परेशानी से घिरा हुआ देखती है तो सब एकजुट होकर न केवल उसका साथ देती हैं, बल्कि हर प्रकार से उसकी मदद करने पर आमादा हो जाती हैं।

दूसरा ठाकुर उस बात को आगे बढाते हुए बोला- चाहे वह कितना गलत भी क्यों न हो। यहाँ तक कि लुच्चे, लफंगे, बलात्कारी, रिश्वतखोरी में ही लिप्त क्यों न हो। पर हमारे समाज में तो गलती वाले का साथ तो दूर रहा, जायज का भी साथ देते झिझक होती है।

तीसरा, चौथा, पाँचवा ठाकुर सबके सब एक साथ बोलने लगे। यह राजपूत समाज तो गिरेगा अभी और गिरेगा साहब, कोई किसी का सहयोग, साथ नहीं देता, कहाँ है संगठन?

एक ठाकुर टोकते हुए बोला-''सब बकवास है। सबको देख लिया है छोड़ो भी और बात करो।''

क्यों? दारू का जायका बिगाड़ दिया।''

हाँ साहब और सब जोर से हँस पड़े। पर उमेशजी की चुप्पी परेशानी का कारण बन रही थी। उमेश जी जैसा वाचाल व्यक्ति जो सभा सोसायटियों में छाया रहने वाला आज चुप क्यों है? आखिर एक ठाकुर साहब मुखातिब होते हुए बोल पड़े-क्यों उमेश जी समाज के सक्षम कर्णधारों की इस दयनीय स्थिति के बारे में आपको कुछ नहीं बोलना?

उमेश जी उस रात बहुत ही संयमित धैर्य भरी भाषा में बोले और बोलते ही गए। उसका सारांश यह था। वे कह रहे थे आखिर हम किसी की भी मदद करने को

(शेष पृष्ठ 31 पर)

कामयाब व्यक्ति

– रश्मि रामदेरिया

कामयाब व्यक्ति अपने चेहरे पर दो ही चीजें रखते हैं– 1. खामोशी, 2. मुस्कराहट।

सिर्फ और सिर्फ आपकी कड़ी मेहनत ही आपको अच्छी किस्मत दे सकती है। गलती उसी से होती है जो मेहनत से काम करता है; जो मेहनत नहीं करता उनकी जिन्दगी तो दूसरों की बुराई खोजने में खत्म हो जाती है।

''कामयाब व्यक्ति की सिर्फ 'चमक' लोगों को दिखाई देती है। उसने कितने 'अंधेरे' देखे हैं, यह कोई नहीं जानता। यदि अपने सपने सच नहीं हो तो रास्ते बदलो, सिद्धान्त नहीं, क्योंकि पेड़ हमेशा पत्तियाँ बदलते हैं....जड़ें नहीं।'' कामयाब लोगों में हमसे कुछ खास अलग नहीं होता, अलग होता है तो बस उनके काम करने का तरीका और खुद को समय के हिसाब से बदलने की आदत। सफल लोगों की सबसे अच्छी आदत कभी हार न मानना है। हमारा व्यवहार हमारी आदतों का प्रतिबिम्ब होता है। हम हमेशा सकारात्मक सोचें ताकि हमें संतुष्टि, खुशी, मन की शान्ति मिले, स्वास्थ्य अच्छा रहे। कोई भी कार्य करने से पहले लक्ष्य बनाकर योजना बनायें और फिर उस पर मेहनत करें उसे पाने के लिये। इस दौरान हम अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान नहीं देते, ऐसी गलती ना करें। अपनी सेहत को प्राथमिकता देनी चाहिये। "Health is Wealth" स्वस्थ शरीर में स्वस्थ दिमाग निवास करता है। कामयाब व्यक्ति में यह हमेशा देखा जाता है कि वह असफल होने के बाद भी कभी रुकते नहीं हैं, दोबारा प्रयास करते हैं, तब तक करते रहते हैं जब तब कि सफल नहीं हो जाते। सफल लोग हर समस्या को हल करना जानते हैं। वे हर दिन अपने कार्य में कुछ नया बदलाव लाते हैं। {They are innovative} सफल व्यक्ति प्रत्येक चुनौती को अवसर के रूप में देखते हैं। वे खुले दिमाग के होते हैं कभी हार नहीं मानते हैं।

''जो मुस्कुरा रहा है उसे दर्द ने पाला होगा,
जो चल रहा है उसके पाँव में छाला होगा,
बिना संघर्ष के इन्सान चमक नहीं सकता,
जो जलेगा उसी दिये में तो उजाला होगा।''

जो भी व्यक्ति मन लगाकर किसी भी असम्भव कार्य को प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील होने लगता है तो वह निश्चित रूप से उसे सम्भव कर ही लेता है। खुद पर काबू पा लेना मनुष्य की सबसे महत्त्वपूर्ण जीत होती है।

"Put you heart, mind and soul into even your smallest acts. This is the secret of success"

हर छोटे से छोटा कार्य भी पूरी लगन, मन लगाकर करें, कामयाबी निश्चित है। कामयाबी उसी को मिलती है जिसके इरादों में जान होती है। सर्वप्रथम अपना लक्ष्य बनायें और फिर अपने लक्ष्य पर लगातार काम करते रहें वो कभी असफल नहीं होते। बिना संघर्ष के किसी प्रकार की सफलता की आशा नहीं की जा सकती है। वीर पुरुष हमेशा संघर्षरत जीवन जीते हैं। धैर्य और आशा का सम्बल होना अत्यन्त आवश्यक होता है।

धीरे–धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आवे फल होय।

जो लोग जीवन में सफलता हासिल करते हैं वे कठिन से कठिन परिस्थितियों से होकर गुजरते हैं, बस विपरीत परिस्थितियों में पीछे नहीं हटते, वे लगातार संघर्ष करते रहते हैं वे खुद को आशावादी रखते हैं। ऐसे व्यक्ति भाग्य पर नहीं बल्कि कर्म पर विश्वास रखते हैं। जिससे वे अपनी इच्छाशक्ति के दम पर असम्भव को भी सम्भव बना देते हैं।

जब तक हम दौड़ने का साहस नहीं जुटाएँगे हमारे लिये प्रतिस्पर्धा में जीतना सदा असम्भव बना रहेगा। कामयाब होने के लिये अच्छे मित्रों की जरूरत होती है और ज्यादा कामयाब होने के लिये अच्छे शत्रुओं की आवश्यकता होती है। खुशी हमें तब मिलेगी जब हम जो सोचते हैं, जो कहते हैं और जो करते हैं, सब सांमजस्य में हो।

''कामयाब लोग अपने फैसले से दुनिया बदल देते हैं और नाकामयाब लोग दुनिया के डर से अपने फैसले बदल लेते हैं।''

जीवन में सफलता का रहस्य-आने वाले अवसर के लिये तैयार रहना है। मिट्टी की पकड़ ही मजबूत होती है, संगमरमर पर तो हमने अनेकों को फिसलते देखा है। कामयाब होने के लिये अकेले ही आगे बढ़ना पड़ता है, लोग तो पीछे तब आते हैं जब हम कामयाब होने लगते हैं। कामयाब इंसान खुश रहे ना रहे पर खुश रहने वाला इंसान कामयाब जरूर होता है।

''मिलता तो बहुत कुछ है इस जिन्दगी में, बस हम गिनती उसी की करते हैं जो हासिल ना हो सका।''

''किस्मत को अंधियारे ने क्या खूब छला
मेहनत से निष्ठा से मेरा दीप जला
उसकी लौ पे जलता रे पतंगे तू किसकी आश में
कितनी आग भरी तेरी प्यास में.....''

●

पृष्ठ 29 का शेष

रोना छोड़िये, पसीना पौंछ लीजिए

आगे क्यों नहीं आते? क्या हम भयभीत हो गए हैं। क्या कायरता ने हमें कसकर जकड़ लिया है। और हम निस्तेज निर्वीर्य-नपुंसक हो गए हैं। क्या एकाएक उस शूरवीर पीढ़ी की, उस महान गौरवशाली परम्परा की पढियों से संचित संस्कृति का सर्वनाश हो गया है। आप सब जब बोल रहे थे तब मैं भी इन्हीं प्रतिक्रियात्मक विचारों के सागर में डूब उतर रहा था। किन्तु मेरे विवेक ने मुझे बचा लिया। मैं अपने इस महान, महान, महा महान राजपूत समाज के लिए ऐसे ओछे विचार सोचने मात्र से अपनी ही नजरों में ओछा पड़ गया।

हम अपने ही समाज के परेशान हालत व्यक्ति की सहायता क्यों नहीं करते उसके लिये सुनिये सही बात और सही कारण क्या है। हमने हजारों वर्ष राज्य किया है। और राज्य का अर्थ होता है दण्डाधिकारी, निष्ठावान न्यायाधीश। न्यायाधीश की आँखों के सामने दो ही बातें मूल रूप से रहती हैं। एक सत्य क्या है, दूसरा न्याय किसके पक्ष में है। और सत्य और न्याय को तराजू में रखने के बाद न व्यक्ति, न परिवार, न समाज और न अपना-पराया। सब गौण हो जाते थे। अन्वेषण में जो तथ्यों पर आधारित खरा उतरता था हम उसी का पक्ष लेते थे। यही हमारी जीवनचर्या थी। यही जन्म लेने का सिद्धार्थ सोपान था। इसी आदर्श उद्देश्य की पूर्ति हेतु हम अपना स्वर्वस्व होम कर कृतार्थ होते आए हैं। जिन समाजों को आप पक्ष लेते देखकर दु:खी होते आ रहे हैं, वे कभी आदर्श नहीं बन पाएँगे और हमारी वह प्रथम इकाई जो जानती है अगर मैंने थोड़ी-सी भी बेईमानी या भूल चूक कर दी तो मेरा समाज सहायता तो दूर मुझे सम्मान की दृष्टि से देखना भी बन्द कर देगा। यही जीवनमूल्यों से अनुप्राणित नैतिकता का भय हमें सदैव सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। और तभी हम आदर्श व्यक्ति बनकर आदर्श समाज का गठन कर पाएँगे। यही इस समाज को, इस राष्ट्र को, एक दिव्य संदेश, एक दैविक जीवन प्रणाली देगा।

आखिर उमेश जी ने सबको शान्त करते हुए कहा यह सहायता-सहायता का रोना छोड़िए और पसीना पौंछ लीजिए।

मैंने सबकी नजर बचाते हुए अपना पसीना पौंछ डाला। बाकियों का बाकी जाने।

भय का कारण ईश्वर-विश्वास की कमी

– संकलित

जो मनुष्य ईश्वर तथा अपने कर्मफल पर विश्वास नहीं करता, वह सदा दु:खी रहता है। सारे संसार की सभी गतिविधियों का स्वामी व नियंत्रणकर्ता परमात्मा है। सभी मनुष्य कहने को तो परमात्मा से कहते हैं- ''त्वमेव माता च पिता त्वमेव आदि'' अर्थात् आप ही हमारे माता-पिता, भाई-बांधव, सखा, विद्या, धन-दौलत एवं सर्वस्व हैं, परन्तु साथ ही दु:खी भी होते हैं, ऐसे लोगों को न तो ईश्वर पर विश्वास है और न उनके लिये परमात्मा का कोई अस्तित्व ही है। उनके लिये परमात्मा है ही नहीं। परमात्मा उनके लिये है, जो अपने जीवन की बागडोर भगवान के हाथों में सौंप देते हैं और ईश्वरीय-न्याय में विश्वास रखते हैं। परमात्मा किसी के साथ पक्षपात नहीं करता। परमात्मा को अपना मान लो एवं सदा न्याय व सच्चाई के मार्ग पर चलो, सदाचारी बनो, कभी किसी का अहित न करो, उस मार्ग पर चलो जिस पर श्रेष्ठ व सज्जन व्यक्ति चला करते हैं तो भगवान आपकी अवश्य सहायता करेंगे, आपका रथ उसी प्रकार हाँकेंगे, जैसे अर्जुन का रथ हाँका था एवं आपके सखा व मित्र बनकर आपका उसी प्रकार साथ देंगे, जिस प्रकार अर्जुन का साथ दिया था।

बहुत सारे लोग तंत्र-मंत्र, ज्योतिष व वास्तु के नाम पर अपनी दुकानदारी चलाते हैं। कुछ लोग गण्डे-ताबीज बेचते हैं। अखबारों में विज्ञापन छपवाते हैं और सभी समस्याओं के समाधान का वायदा करते हैं, परन्तु वे स्वयं अनेक प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त होते हैं। ऐसे लोग तांत्रिक बनकर दूसरों के बच्चों की बलि तक चढ़वा देते हैं। कुछ तांत्रिकों द्वारा झाड़-फूंक व इलाज के नाम से नारियों के यौन-शौषण तक किये जाते हैं। शास्त्रों में स्पष्ट लिखा है कि नारियों को किसी को गुरु नहीं बनाना चाहिए और अपने पति को ही अपना गुरु मानना चाहिए, परन्तु बहुत से ढोंगी व पाखण्डी लोग परस्त्रियों के गुरु बनकर उनका यौन-शोषण करते हैं। वे स्वयं नरक में जाते हैं और अपनी शिष्याओं को भी अपने साथ नरक में ले जाते हैं।

विपत्तियों से बचने का एकमात्र उपाय यह है कि परमात्मा को ही अपना बन्धु-बान्धव, माता-पिता, गुरु, धन-दौलत, सखा-सहेली सब कुछ मान लो, उस पर पूर्ण विश्वास करो, संसार के सभी लोग धोखा दे सकते हैं, परमात्मा कभी किसी को धोखा नहीं देता। परमात्मा द्वारा दिया गया ''गुरु ज्ञान'' गीता, वेद एवं उपनिषदों के रूप में हमें उपलब्ध है। गीता में सभी धर्म-शास्त्रों का सार व सारांश है। अत: गुरु-ज्ञान सीखने के लिये हर व्यक्ति को गीता का नित्य स्वाध्याय करना चाहिए एवं यह मान लेना चाहिए कि गीता का गुरु-ज्ञान देने वाला परमेश्वर हमेशा हमारे साथ-साथ, हमारे दाँये-बाँये, आगे-पीछे एवं ऊपर-नीचे रहता है। परमात्मा न तो हमें छोड़ता है, न छोड़ेगा और न छोड़ सकता है। वह हर घड़ी, हर पल हमारे साथ रहता है।

अपने ज्ञान व कर्म पर विश्वास करो तथा और किसी पर विश्वास मत करो, क्योंकि कोई किसी का भला नहीं चाहता। सबके सब ठग, धोखेबाज और मक्कार हैं। अपनी रोजी-रोटी के लिये दूसरों को धोखा देने के लिये मीठी-मीठी बातें बनाकर भोलेभाले-भले व्यक्तियों को फंसाया जाता है। हर व्यक्ति को समझ लेना चाहिए कि बबूल का पेड़ लगाकर आम के फल नहीं मिल सकते। हर व्यक्ति को अपना भला स्वयं ही करना है। किसी के बहकावे में न आयें। गण्डा, ताबीज, धागे बाँधने की कोई आवश्यकता नहीं है। किसी से डरने की कोई जरूरत नहीं है। विश्वास करो कि स्वयं परमात्मा तुम्हारा जन्म-जन्म का साथी है, एकमात्र वही विश्वास के योग्य है, उसने हमेशा तुम्हारा साथ दिया है, वह हमेशा तुम्हारा साथ दे रहा है और हमेशा साथ देता रहेगा। ऐसे दयालु, पक्के और विश्वसनीय साथी को

(शेष पृष्ठ 34 पर)

अपनी बात

सामाजिक कर्मक्षेत्र में जब कोई कर्मरत होते हैं तो कुछ जगहों से आलोचना होना स्वाभाविक है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रारम्भ से ही इसकी आलोचना का काम भी प्रारम्भ हो गया और वह आज भी चल रहा है। संघ अपने निर्धारित मार्ग पर निरन्तर चल रहा है क्योंकि यह अनुभूत मार्ग है अत: दिशा और दर्शन में कोई बदलाव नहीं होता किन्तु इसी मार्ग की अनुकूल सहयोगी बात हो तो वह जुड़ जाती है। परन्तु आलोचना का क्योंकि कोई सैद्धान्तिक आधार नहीं होता अत: नये-नये मनगढन्त मुद्दे उठते हैं और धीरे-धीरे शान्त होते जाते हैं, फिर नये मुद्दे आते हैं और वे भी समय पाकर शान्त होते जाते हैं। इसीलिए संघ के स्वयंसेवकों को यही निर्देश दिए जाते हैं कि किसी भी आलोचना का उत्तर देने की आवश्यकता नहीं क्योंकि संघ को जिन्होंने जाना ही नहीं, संघ में आकर संघ के भावों को पहचाना ही नहीं, वे संघ के बारे में क्या जानते हैं? तब उनके मुद्दे हमारे लिये अर्थहीन ही हैं। अत: जागरूक रहो, हमारी सहनशक्ति को बलवान बनाने और अपने मार्ग पर अधिक गतिमान होने के लिये भगवान ने ऐसा अवसर दिया है, यह मानकर ऐसा अवसर देने का अहसान मानो।

एक सूफी कहानी है। एक आदमी शिकारी था, वह जंगल में गया। थका-मांदा एक पेड़ के नीचे बैठा। वहाँ पास में ही किसी आदमी की एक खोपड़ी पड़ी थी। जैसे कई व्यक्ति कभी-कभी अपने आप से ही बातें करने लग जाते हैं, स्वयं ही अपनी बात का उत्तर भी दे लेते हैं और वैसे ही चेहरे के भाव भी प्रकट होते रहते हैं। पास में खोपड़ी पड़ी थी, विश्राम कर रहा था, दूसरा कोई काम था नहीं। उसने खोपड़ी से कहा-हलो! क्या कर रहे हो? मजाक में ही बोल रहा था। अपने से ही मजाक कर रहा था। काम कुछ उस समय करना नहीं था और जानता था खोपड़ी बोलेगी नहीं।

खोपड़ी बोली-हलो! शिकारी तो घबरा गया एकदम। जब खोपड़ी बोली है तो कुछ पूछना जरूरी हो गया क्योंकि वार्तालाप में चुप्पी क्यों हो। उसने पूछा-आपकी यह गति कैसे हुई? खोपड़ी ने उत्तर दिया-बकवास करने से। स्वयं से ही बात कर रहा था पर लगा खोपड़ी बोल रही है। घबराहट में शहर की ओर भागा। सोचा जाकर राजा को बताऊँ। ऐसी खोपड़ी तो राजमहल में होनी चाहिए। खोपड़ी अनूठी है, पुरस्कार मिलेगा। राजा को जाकर कहा कि ऐसी खोपड़ी देखी है। राजा ने कहा फालतू बकवास मत कर। उसने कहा मैं सच कह रहा हूँ, बकवास नहीं है, अपनी आँखों से देखकर आ रहा हूँ। राजा ने पहले तो टालने की कोशिश की, लेकिन वह प्रसिद्ध शिकारी था, राजा जानता था कि झूंठ बोलेगा नहीं। अपने दरबारियों को लेकर शिकारी के पीछे-पीछे जंगल को चला। पहुँचकर शिकारी ने खोपड़ी से कहा-हलो! खोपड़ी बोली नहीं। उसने फिर खोपड़ी से कहा-हलो! खोपड़ी बोली नहीं। फिर पूछा लेकिन खोपड़ी बोली नहीं। घबराया। राजा ने कहा-मुझे पहले ही पता था, ऐसा नहीं हो सकता। राजा ने दरबारियों को आदेश दिया-इसकी गर्दन काट दो। शिकारी की गर्दन कटवा कर राजा लौट गया। अब पहली खोपड़ी बोली-हलो! आपकी यह गति कैसे हुई? शिकारी की खोपड़ी बोली-बकवास करने से।

बकवास करने वाले करते रहें, उधर ध्यान नहीं देना है लेकिन सावधान रहना है कि किसी के बारे में जानते नहीं, किसी के काम का कोई अनुभव न हो, तब तक उसके बारे में कुछ कहना नहीं चाहिए। हालांकि कहने का, टिप्पणी करने का बड़ा मन करता है, बड़ी आतुरता रहती है, कहने में बड़ा रस आता है। अहंकार को बड़ी तृप्ति मिलती है। लेकिन बिना जाने, बिना ठीक प्रकार समझे किसी भी प्रकार की टिप्पणी करना उचित नहीं है। जो ऐसा नहीं करते हैं, इस कहानी की तर्ज पर वह बकवास ही होगी।

संत सुन्दरदास का एक पद है -

एकनि के बचन सुनत अति सुख होइ,
फूल से झरत है अधिक मन भावने।
एकनि के बचन अशम मानौ बरषत,
श्रवण के सुनत लगत अलखावने।।

अर्थात्- एक के वचन सुनकर अपूर्व सुख का आविर्भाव होता है। जैसे झर गये हारसिंगार के फूल। झर-झर-झर... और जैसे भर गये सुगंध से प्राणों को। पर किसी

के वचन ऐसे लगते हैं जैसे कोई पत्थर मार रहा हो। कर्ण-कटु जहरीले। शब्द तो वे ही होते हैं, किसी के होठों पर अमृत हो जाते हैं, किसी के होठों पर जहर हो जाते हैं। भगवान द्वारा दी गई बुद्धि का दुरुपयोग होने से ही जहरीली आलोचनाएँ होती हैं। उन पर दया करो और संकल्पित बनो कि हमारे होठों से जहर नहीं निकलने देंगे। हमारे होठों में पू. तनसिंहजी रचित मधुर गीतों की मधुरता को ही रमाये रखेंगे। ●

पृष्ठ 31 का शेष

भय का कारण ईश्वर-विश्वास की कमी

हमेशा अपना साथी, सहायक, स्वामी, सखा मानकर निर्भय हो जाओ। धागे, गण्डा, ताबीज आदि अगर आवश्यक होते तो परमात्मा स्वयं ही जन्म देने के साथ-साथ तुम्हें दे देता। अत: वे आवश्यक नहीं हैं।

परमात्मा का वैभव सारे संसार में बिखरा पड़ा है। यम-नियमों का पालन करने वाले व्यक्ति उस वैभव को पाने के सच्चे अधिकारी हैं। जो व्यक्ति यम-नियमों का पालन करते हैं, वे परमात्मा के बताये हुए रास्ते पर चलते हैं और यह जान लेते हैं कि परमात्मा केवल उन्हीं का है-केवल उन्हीं का है तथा परमात्मा के संरक्षण में वे सर्वथा व सर्वदा संरक्षित हैं, कोई उनका बाल बांका नहीं कर सकता।

शिविर सूचना

यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष है कि श्री क्षत्रिय युवक संघ के आगामी प्रशिक्षण शिविर निम्न प्रकार से होने जा रहे हैं -

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान, मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.8.2023 से 30.8.2023	राणोजी का कोटड़ा (बाड़मेर)
2.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.8.2023 से 30.8.2023	रमजान की गफन बादरामी (बाड़मेर)
3.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.8.2023 से 30.8.2023	सोनियासर (बीकानेर)
4.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.8.2023 से 30.8.2023	चावण्डिया-तह. कुचामन (नागौर)
5.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.8.2023 से 30.8.2023	मीतासर (चूरू)
6.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.8.2023 से 30.8.2023	ईंठो का बास (जोधपुर)
7.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	27.9.2023 से 30.9.2023	डेरिया (जोधपुर)
8.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	16.9.2023 से 19.9.2023	ढींगसरी (बीकानेर)
9.	प्रा.प्र.शि. (बालक)	23.9.2023 से 26.9.2023	भालीखाळ (बाड़मेर)
10.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	23.9.2023 से 26.9.2023	आलोक आश्रम (बाड़मेर)

दीपसिंह बेण्याकाबास

शिविर कार्यालय प्रमुख, श्री क्षत्रिय युवक संघ

श्री जय अंबे स्वयं सेवक संघ

श्री जय अंबे स्वयं सेवक संघ
स्थापना :- २१/०४/१९९०

-: श्री जय अंबे स्वयं सेवक संघ के कार्य :-

+ साइकल स्कीम + 700 सभ्य की बचत स्कीम + व्यसन मुक्ति
+ कुरिवाज का त्याग + अंध श्रद्धा को दूर करना + प्राथमिक कक्षा के बालकों के लिए हर साल फ्री में नोटबुक और जरूरी सामग्री देना
+ इनाम वितरण + दशहरा महोत्सव + महाराणा प्रताप जयंती महोत्सव
+ गांव की प्राथमिक स्कूल में कंप्यूटर लेब निशुल्क बालकों के लिए

देवेंद्रसिंह, घनश्यामसिंह
अध्यक्ष

सिद्धराजसिंह, अनिरुद्धसिंह
उपाध्यक्ष

हशपालसिंह, जयदीपसिंह
उपाध्यक्ष

यशराजसिंह, तजवितसिंह
मंत्री

हिरेन्द्रसिंह जटुभा
संगठन मंत्री

मित्राजसिंह, नवलसिंह
संगठन मंत्री

महावीरसिंह, महेंद्रसिंह
छात्र पुरस्कार वितरण - समन्वयक

भगीरथसिंह, किशोरसिंह
छात्र पुरस्कार वितरण - समन्वयक

रामदेवसिंह नारुभा
महाराणा प्रताप वर्षगांठ - समन्वयक

शक्तिसिंह, राजेन्द्रसिंह
महाराणा प्रताप जयंती - सह संयोजक

सिद्धराजसिंह, जयेंद्र सिंह
दशहरा महोत्सव समन्वयक

युवराजसिंह, महेंद्रसिंह
दशहरा पर्व - सह संयोजक

ASHAPURA ELECTRONIC

Deals in : Shaver, Trimmer & Torch

Mahipal Singh (M) 7838733694, 8178326989

Shop No. 264, New Lajpat Rai Market,
Chandni Chowk, Delhi-06

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

नवभारत समूह द्वारा श्री क्षत्रिय युवक संघ के पुणे प्रांत के प्रांतप्रमुख
हमारे बंधु **श्री पवन सिंह बिखरणिया** (फाउंडर व सीईओ, एस्सेंट)
को राजस्थान गौरव पुरस्कार एवं **श्री विक्रमादित्य सिंह चाडी**
(असिस्टेंट प्रोफेसर, लॉ डिपार्टमेंट, पुणे यूनिवर्सिटी) को पुणे गौरव पुरस्कार
से सम्मानित किए जाने पर हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

-: शुभेच्छु :-

रणजीत सिंह चौक, नरपत सिंह लूणा खुर्द, बाबुसिंह सोनू, रणजीत सिंह आलासन,
नाथू सिंह काठाडी, दिलीप सिंह गड़ामनोहर सिंह दुजार, महेंद्र सिंह पादरड़ी कल्लां
शम्भु सिंह सिवाना, वागसिंह लोहिड़ी, गोपालसिंह चारणीम, फतेहसिंह चुंडियावाड़ा
गोपालसिंह भियाड़, प्रवीणसिंह बरामती, गणपतसिंह बावड़ी कल्ला,
जितेंद्रसिंह खिंवसर जैसलमेर, मिठूसिह सिवाना , बालाजीसिंह बैंगलोर
विजयप्रतापसिंह रायरा कलां, छैलसिंह कुशालपुरा, महेन्द्रसिंह छ नोसर, श्यामप्रतापसिंह कोटड़ी

अगस्त, सन् 2023
वर्ष : 60, अंक : 08

समाचार पत्र पंजी.संख्या R.N.7127/60
डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City /411/2023-25

संघशक्ति
ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा,
जयपुर-302012
दूरभाष : 0141-2466353

E-mail : sanghshakti@gmail.com
Website : www.shrikys.org

श्रीमान्..

....

....

स्वत्वाधिकारी श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास के लिये, मुद्रक व प्रकाशक, लक्ष्मणसिंह द्वारा ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर से : गजेन्द्र प्रिन्टर्स, जैन मन्दिर सांगाकान, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर फोन : 2313462 में मुद्रित। सम्पादक-लक्ष्मणसिंह